साप्ताहिक
शांति मिशन
नई दिल्ली

वर्ष-28 अंक- 42 17 - 23 अक्तूबर 2021 पृष्ठ 12

अन्दर पढ़िए

अख़्लाक़ की ताक़त सब से बड़ा मोजेज़ा
पृष्ठ - 6

इक़बाल और मुहब्बते रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम
पृष्ठ - 7

उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनाव-2022

क्या भजपा का मंडल-कमंडल कार्ड सफल होगा?

अभी विधानसभा चुनाव में लगभग छह माह का समय है और भाजपा ने चुनाव में सफलता हासिल करने के लिए मंडल और कमंडल का खेल आरंभ कर दिया है।

उत्तर प्रदेश में भाजपा मंडल और कमंडल की राजनीति एक साथ कर रही है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जहां 'अब्बा जान', 'चचा जान' से लेकर राम मंदिर और हिंदुत्व के मुद्दों को गरमाने में लगे हैं, वहीं भाजपा की केन्द्रीय आलाकमान सोशल इंजीनियरिंग के बहाने मंडल की राजनीति को चमकाने में लगी है। कहा जाता है कि दो नावों के सहारे अक्सर लोगों की नैया डूब जाती है। एक नाव पर मंडल है तो दूसरी नाव पर कमंडल। योगी आदित्यनाथ चुनावी रैलियों में 'अब्बा जान' के बहाने चुनाव को हिन्दू- मुस्लिम बनाने की कोशिश कर रहे हैं।

दरअसल, उत्तर प्रदेश में भाजपा की यही राजनीति 2014 और 2019 के लोकसभा चुनावों के साथ-साथ 2017 के विधानसभा चुनावों में भी रही है। हर बार उसे फायदा मिला है। 2013 के मुज़फ्फर नगर दंगों की आंच में भी सियासी रोटियां सेंकी गई थीं। यह चूल्हा 2019 तक सुलगता रहा लेकिन अब ब्राह्मणों की नाराज़गी, किसान आंदोलन के चलते पश्चिमी यू.पी. में जाट और मुस्लिमों में पटती खाई और राम मंदिर पर फैसले के बाद खुशी में डूबे सुस्ताते राम भक्तों के चलते योगी आदित्यनाथ कमंडल पार्ट-2 की ज़रूरत महसूस कर रहे हैं। कुछ जानकारों का कहना है कि यू.पी. में जितना सांप्रदायिक ध्रुवीकरण होना था हो चुका। ऐसे में हिन्दू वोटों का एक साथ बनाए रखना नई चुनौती है। जानकारों का कहना है कि हिन्दुत्व का मुद्दा बैक फायर भी कर सकता है जैसा कि बंगाल में हुआ था। हिन्दुत्व के नाम पर वोटों की गोलबंदी तभी सफल होती है जब वैसी ही आक्रामक प्रतिक्रिया हो लेकिन यू.पी. में अखिलेश और मायावती समझदारी से काम ले रहे हैं। तीन तलाक हट चुका, लव जेहाद पर क़ानून आ गया, धारा 370 हट गई, राम मंदिर की नींव बन गई। अब आगे क्या? बुनियादी मसलों को पूरी तरह हाशिए पर नहीं रखा जा सकता। भूखे पेट भजन न होइ गोपाला।

कुल मिलाकर कमंडल की राजनीति 20-20 मैच की तरह है गेंद लपेटे में आ गई तो ठीक, नहीं तो गिल्लियां बिखरनी ही हैं लेकिन मंडल की राजनीति टेस्ट मैच की तरह होती हैं भाजपा आला कमान मंडल की पारी ज़माने में लगी है जो स्थाई नतीजे देती है। यू.पी. में 41 प्रतिशत ओ.बी.सी. हैं इसमें से 21 प्रतिशत अपर ओ.बी.सी. हैं जिसमें 9 प्रतिशत यादव जैसी प्रभावशाली जाति आती हैं। बाकी 20 प्रतिशत अति पिछड़े है। 2019 के लोकसभा चुनावों में 60 प्रतिशत यादवों ने सपा/बसपा गठबंधन को वोट दिया था लेकिन 72 प्रतिशत अति पिछड़ों का वोट भाजपा को मिला था लेकिन इसके लिए भाजपा को कड़ी मशक्क़त करनी पड़ी। 1996 में भाजपा को यू.पी. में 26 प्रतिशत ओबीसी वोट मिला था, जो 2014 में बढ़कर 34 प्रतिशत हो गया। 2017 में 47 प्रतिशत ओ.बी.सी. वोट मिला जो 2019 में 49 प्रतिशत हो गया।

2013 के मुज़फ्फर नगर दंगों की आंच में भी सियासी रोटियां सेंकी गई थीं। यह चूल्हा 2019 तक सुलगता रहा लेकिन अब ब्राह्मणों की नाराज़गी, किसान आंदोलन के चलते पश्चिमी यू.पी. में जाट और मुस्लिमों में पटती खाई और राम मंदिर पर फैसले के बाद खुशी में डूबे सुस्ताते राम भक्तों के चलते योगी आदित्यनाथ कमंडल पार्ट-2 की ज़रूरत महसूस कर रहे हैं।

सोशल इंजीनियरिंग के नाम पर भाजपा की नज़र लोअर ओ.बी.सी. वोट बैंक पर रही है। भाजपा को 2014 में लोअर ओबीसी का 22 प्रतिशत वोट मिला था जो 2017 में 47 प्रतिशत हो गया। 2019 में सपा और बसपा को लोअर ओ.बी.सी. का 22 प्रतिशत वोट ही मिला था। अगर अपर ओ.बी.सी. वोट की बात ही मिला था। अगर अपर ओ.बी.सी. वोट की बात की जाए तो 2019 के लोकसभा चुनावों में भाजपा को ज़रूर 41 प्रतिशत वोट मिला। सपा/बसपा को 29 प्रतिशत और कांग्रेस को 15 प्रतिशत वोट मिला था लेकिन विधानसभा चुनावों की बात आती है तो अपर ओबीसी का वोट खासतौर से यादव वोट सपा की झोली में ही जाता रहा है। 2019 के लोकसभा चुनावों में भाजपा को ज़रूर 41 प्रतिशत वोट मिला। सपा/बसपा को 29 प्रतिशत और कांग्रेस को 15 प्रतिशत वोट मिला था लेकिन विधानसभा चुनावों की बात आती है तो अपर ओबीसी का वोट खासतौर से यादव वोट सपा की झोली में ही जाता रहा है। 2019 के लोकसभा चुनावों में भाजपा को 29 प्रतिशत यादवों ने वोट दिया था। भाजपा का सारा ध्यान ग़ैर यादव ओ.बी.सी. और ग़ैर जाटव दलित वोटों पर है। इसका उदाहरण हाल ही में हुआ मोदी मंत्रिमंडल का विस्तार है।

इसी तरह हाल ही में योगी मंत्रिमंडल का भी विस्तार हुआ। सात नए लोगों को मंत्री बनाया गया लेकिन इनमें से सिर्फ एक ब्राह्मण जितिन प्रसाद को ही कैबिनेट मंत्री बनाया गया। बाकी 6 में से 03 ओ.बी.सी. थे, 02 दलित और एक आदिवासी था। 03 ओ.बी.सी. में से भी तीनों ग़ैर-यादव ओ.बी.सी. थे। दोनों दलित ग़ैर जाटव दलित थे। यानि ऐसा लगता है कि भाजपा ने मान लिया है कि यादव ओ.बी.सी. और जाटव दलित उसे वोट देने वाला नहीं है, इसलिए उन पर समय और पद ख़र्च करने की ज़रूरत नहीं है। इसी तरह मुसलमान भी भाजपा के पास आने वाला नहीं है लिहाज़ा मंत्रिमंडल में सिर्फ एक ही मुस्लिम मंत्री है।

उत्तर प्रदेश में 19 प्रतिशत मुस्लिम 11 प्रतिशत जाटव और 10 प्रतिशत यादव, ये तीनों मिलकर 40 प्रतिशत होते हैं। यानि भाजपा को बाकी बचे 60 प्रतिशत वोटरों में से जीत के लिए ज़रूरी 30 से 35 प्रतिशत वोट निकालने हैं इसलिए सारा ज़ोर इसी पर दिया जा रहा है।

जानकारों के अनुसार उत्तर प्रदेश के 75 जिलों में से 24 में कोरोना महामारी का दूसरा दौर प्रलय बनकर आया था। 7 नए मंत्री इन्हीं 24

बाक़ी पेज 11 पर

उपराष्ट्रपति के अरुणाचल प्रदेश यात्रा पर चीन को आपत्ति

चीन ने उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू के हालिया अरुणाचल प्रदेश दौरे पर ऐतराज़ जताया है, जिसे भारत ने सिरे से ख़ारिज कर दिया है। चीन के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता झाओ लिजियन ने कहा, 'चीन भारत की ओर से अवैध रूप से स्थापित तथाकथित अरुणाचल प्रदेश को मान्यता नहीं देता है और भारत के उपराष्ट्रपति की हालिया यात्रा का दृढ़ता से विरोध करता है। बता दें कि चीन अरुणाचल को अपना बताता है। वहीं विदेश मंत्रालय ने कहा है कि (चीन की) ऐसी टिप्पणियों को हम ख़ारिज करते हैं। अरुणाचल प्रदेश भारत का अभिन्न अंग है। भारत के राजनेता नियमित रूप से राज्य की यात्रा करते हैं, जैसे कि वे भारत के किसी दूसरे राज्यों में करते हैं। भारतीय नेताओं की भारतीय राज्य की यात्रा पर आपत्ति करने की वजह समझ से परे है।

क्या है अरुणाचल में विवाद?

चीन से लगी सीमा (एलएसी) पर बाकी इलाक़ों की तरह अरुणाचल प्रदेश के पास भी भारत-चीन के बीच बरसों से विवाद रहा है। इस इलाक़े पर चीन दावा करता रहा है। तिब्बत से सटे होने के कारण सामरिक और कूटनीतिक हिसाब से चीन के लिए इलाक़ा बेहद अहम हो जाता है।

चीन इसे कब से अपना बताता है?

चीन ने 60 के दशक में अरुणाचल के उत्तर स्थित तवांग पर सबसे पहले दावा किया। बाद में सालों में उसके इस दावे का दायरा बढ़ता रहा। अब वह भारतीय नेताओं के अरुणाचल दौरे पर भी एतराज़ करता रहता है।

भारत अरुणाचल प्रदेश को हमेशा अपना सबसे अहम अंग मानता रहा है। पिछले दिनों ही अरुणाचल प्रदेश के तवांग इलाके में चीन और भारत के सैनिक आमने-सामने आ गए थे, जिसके बाद वहां मामूली विवाद हो गया। चीनी सैनिकों को हिरासत में लेने की बात भी आई थी।

बांग्लादेश

मर्केल की राह पर हसीना?

बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख़ हसीना विगत 28 सितंबर को 75 वर्ष की हो गई हैं। हसीना जर्मनी की कार्यकारी चांसलर एंजेला मर्केल का अनुसरण कर रही हैं, जिन्होंने सोलह वर्ष तक सत्ता में रहने के बाद पद छोड़ने का फैसला किया है। हसीना वर्ष 2009 से प्रधानमंत्री हैं और अगर 1996 से 2001 तक के उनके पांच वर्ष के प्रधानमंत्री काल को भी जोड़ लिया जाए, तो शीर्षपद पर वह मर्केल से भी ज़्यादा समय तक रही है। सत्तारुढ़ अवामी लीग की महिला शाखा की संयुक्त सचिव शहनाज़ परवीन डॉली कहती हैं कि 'ईश्वर की मर्ज़ी से, हसीना अपने बचे हुए दो वर्ष से अधिक का कार्यकाल पूरा करेंगी और अगले चुनाव में पार्टी को जीत दिलाएंगी। डॉली कहती हैं कि 'वह ऐसी नेता है जिनके लिए आप अपना जीवन बलिदान कर सकते हैं। वह अपने महान पिता की तरह प्रेरणादायक हैं।

हसीना को अपने पिता की याद परेशान भी करती है और प्रेरित भी। उनका जन्म वष 1947 में भारत विभाजन के एक माह बाद हुआ था, जब उनके पिता शेख़ मुजीबुर्रहमान उर्दू लागू करने का विरोध करते हुए पूर्वी पाकिस्तान की आधिकारिक भाषा के रूप में बांग्ला भाषा को मान्यता के लिए संघर्ष शुरू कर रहे थे। वह भाषा आंदोलन स्वतंत्रता संघर्ष में बदल गया, क्योंकि बंगालियों ने पूर्वी पाकिस्तान के समृद्ध संसाधनों के इस्लामाबाद द्वारा शोषण का विरोध किया। आधिकारिक आंकड़ों के मुताबिक, पाकिस्तान द्वारा दिए गए नरसंहार में 30 लाख बंगाली मारे गए और सवा लाख महिलाओं की बेइज्ज़ती की गई। हसीना के पिता को क़ैद कर लिया गया था, जबकि उनके भाई मुक्ति फौज में शामिल होने भारत चले गए थे। बांग्लादेश की आज़ादी के चार वर्ष बाद सैन्य अधिकारियों के एक खूनी तख़्तापलट में उनके पिता मुजीबुर्रहमान सहित उनके पूरे परिवार का सफाया कर दिया गया था। हसीना और बहन रेहाना बच गईं क्योंकि वह जर्मनी में उनके पति के साथ थीं, जो परमाणु वैज्ञानिक थे और अध्ययन अवकाश पर थे। भारत में छह वर्ष तक रहने के बाद हसीना 1981 में अवामी लीग को पुन: संगठित करने के लिए बंग्लादेश लौट गई और लगातार सैन्य तानाशाहों जनरल ज़िया उर रहमान एवं जनरल एच.एम. इरशाद से मुक़ाबला करती रहीं। ज़िया को तो उनके अधिकारियों के ज़रिये हसीना के उनके उत्तराधिकारी इरशाद के पतन की पटकथा लिख दी। वह 1991 का चुनाव अपनी कट्टर प्रतिद्वंदी बेगम ख़ालिदा ज़िया से हार गईं, लेकिन पांच वर्ष सत्ता में आई। वह 'बेगमों की लड़ाई' में 2001 का चुनाव हार गईं और 21 अगस्त, 2004 को एक बड़े हमले से बच गईं। इस्लामी कट्टरपंथी समूह हरकत उल जिहाद (हूजी) द्वारा किए गए हमले में अवामी लीग के बीस से अधिक नेताओं और कार्यकर्ताओं की मौत हो गई।

वर्ष 1975 के तख़्तापलट पर *मिडनाट मैसेकेर* नामक किताब के लेखक सुखरंजन दासगुप्ता कहते हैं, 'उनसे ज़्यादा साहसी कोई नहीं हो सकता। क्या आप कल्पना कर सकते हैं एक पूरी तरह से धार्मिक बंगाली मुस्लिम गृहिणी उस देश में वापस लौटकर, जहां उनके पूरे परिवार का सफाया कर दिया गया था, अपने पिता की पार्टी को फिर से संगठित कर सैन्य शासन को खत्म करके सत्ता में आ सकती है और 2009 से लगातार बारह सालों तक शासन कर सकती है। शेख़ मुजीबुर्रहमान और हसीना को भी अच्छी तरह जानने वाले दासगुप्ता कहते हैं, 'अपने पिता के सोनार बांग्ला के सपने को पूरा करने की भावना ने उन्हें असंभव जोखिम उठाने के लिए प्ररित किया है।'

अपने लम्बे कार्यकाल में हसीना के पास दिखाने के लिए काफी कुछ है। पूर्वी कनिष्ठ सूचना मंत्री और हसीना की बेहद करीबी तराना हलीम कहती हैं 'उन्होंने बांग्लादेश के विकास के स्वर्णिम दशक का नेतृत्व किया, 'जब हमारी प्रति व्यक्ति आय भारत से अधिक हो गई, विदेशी मुद्रा भंडार से लेकर बिजली उत्पादन तक के सभी आर्थिक संकेतक कई गुना बढ़ गए। उन्होंने कट्टरपंथ और आतंक को नियंत्रित किया जिसने पाकिस्तान और अफग़ानिस्तान को बर्बाद कर दिया। देश ने उनके कार्यकाल में गरीबी उन्मूलन और सामाजिक समावेश, लैंगिंग सशक्तीकरण बेहतर शिक्षा और बहुत कुछ देखा है।' हलीम कहती हैं कि उन्होंने हमें राजनीतिक स्थिरिता दी, जिसने विकास को गति दी।

लेकिन शेख़ हसीना के विरोधी भी कम नहीं हैं, जो उन पर बांग्लादेश को 'पुलिस न्यायिक मुक़दमे' कई गुना बढ़ गए हैं। विपक्ष ने उन पर 2019 के चुनावों में धांधली का आरोप लगाया, जिसमें अवामी लीग गठबंधन ने 300 सीटों में 283 सीटों पर जीत हासिल की थी।

विपक्ष के आरोपों को ख़ारिज करते हुए अवामी लीग के युवा नेता सूफी फारूक, जिन्होंने 'डिजिटल बांग्लादेश' अभियान में अहम भूमिका निभाई कहते हैं, कृषि से लेकर सूचना प्रौद्योगिकी और विनिर्माण तक मुझे एक ऐसा क्षेत्र दिखाइए, जहां बांग्लादेश ने हमारे शासन के दौरान बड़ी प्रगति नहीं की है। नमक प्रतिरोधी फसलों को शुरू से लेकर सॉफ्टवेयर निर्यात को बढ़ावा देने और विदेशी रेमिटेंस को बढ़ावा देने वाले श्रम निर्यात को सुव्यवस्थित करने तक हमने यह सब किया है। विपक्ष ने हमें बेदख़ल करने के लिए केवल पेट्रोल बम फेंके और

बाक़ी पेज 11 पर

देख-रेख के अभाव में बदहाल हो गईं कई ऐतिहासिक इमारतें

दिल्ली के धरोहर, अब हो गए खण्डहर

दिल्ली में हम टूरिज्म की बात करते हैं, तो सबसे पहले ज़ेहन में ऐतिहासिक इमारतों की छवि सामने आती हैं। जैसे कुतुब मीनार, इण्डिया गेट, लाल क़िला, हुमायूं का मकबरा आदि। इन स्मारकों को देखने हर वर्ष देश दुनिया से लाखों पर्यटक आते हैं, लेकिन कई इमारतें देख-रेख के अभाव में जर्जर हो गई हैं ऐसा ही कुछ हाल साउथ वेस्ट और वेस्ट दिल्ली के इलाकों में बनीं ऐतिहासिक इमारतों का है। कुछ पर अवैध कब्ज़ा हो गया है तो कुछ अतिक्रमण का शिकार है। लोग चाहते हैं कि इनका भी चांदनी चौक की तर्ज़ पर सौंदर्यीकरण किया जाएं, जिससे यहां पर भी टूरिस्ट आएं और रोज़गार के अवसर पैदा हों। हालांकि दिल्ली टूरिज्म की आधिकारिक वेबसाइट पर भी इन इमारतों का ज़िक्र नहीं हैं जबकि हाल ही में साउथ एमसीडी ने एक वेबसाइट बनाई है, जिसमें इन इमारतों का ज़िक्र किया गया है।

हस्तसाल की मीनार 17वीं शताब्दी में बनाई गई थी। देख-रेख के अभाव में अब यह टूटकर गिरने लगी है। लोगों का कहना है कि 2019 में कुछ अधिकारी आए थे और मीनार में ताला लगाकर चले गए। साथ ही मीनार को लोहे की रॉड से सपोर्ट दिया था, ताकि यह गिरे नहीं। इसके बाद से कभी कोई अधिकारी यहां नहीं आया। इस मीनार की ऊंचाई 17 फीट थी। धीरे-धीरे टूट कर गिरने की वजह से अब ऊंचाई कम हो गई। माना जाता है कि इसे शाहजहां ने बनवाया था। यहां पर एक शिकारगाह भी था। इसे कुतुब मीनार की तर्ज़ पर बनाया गया था। मीनार में एक घुमावदार सीढ़ी है, जो ऊपर की ओर जाती है। इसमें सैंडस्टोन की क्लैडिंग और कंगूरा पैटर्न देखने को मिलते हैं। इस इलाक़े में यह सबसे ऊंची इमारत थी, लेकिन अब आसपास बड़ी संख्या में लोग रह रहे हैं। कुछ ने अपने घर के अंदर मीनार की ज़मीन को भी दबाव लिया है।

हस्तसाल की मीनार से कुछ दूरी पर बना हाथी खाना पूरी तरफ से अतिक्रमण का शिकार हो गया है। माना जाता है कि यहां पर शाहजहां जब शिकार करने आते थे, तब यहां पर उनके हाथी खड़े होते थे और यही से शिकार करने जाते थे। मीनार और हाथी खाना को जोड़ने के लिए एक टनल भी बनाई गई थी, जो कि अब बंद हो गई है। लोगों का कहना है कि अगर इस हाथी खाना को

दिल्ली टूरिज़्म की वेबसाइट पर इसके बारे में कोई ज़िक्र नहीं है। अब चाहकर भी दोबारा इमारतों को संजोया नहीं जा सकता है। मितराऊं गांव में 18वीं शताब्दी में बनी हवेली की हालत दयनीय हो गई है। पहले जिस हवेली में कचहरी लगती थी, अब यह कूड़ाघर बनकर रह गई है।

संजोया जाता, तो इसकी सूरत कुछ और होती। लेकिन, सभी लोगों ने इसके आसपास अवैध कब्ज़ा कर लिया है। अब कुछ ही अवशेष बचे हैं। अगर अब भी ध्यान नहीं दिया गया, तो यह पूरी तरह से ख़त्म हो जाएगा

नजफगढ़ दिल्ली शहर का मुख्य प्रवेश द्वार था, जिसकी स्थापना नजफ ख़ान ने शाह आलम के दूसरे शासनकाल के दौरान की थी। दो मंज़िल का स्ट्रक्चर बनाया गया थां जिसमें ईस्ट और वेस्ट फेस पर एक नुकीला मेहराबदार एंट्री गेट है, लेकिन छत पूरी तरह से ढह गई है। दो मंज़िला दालान का उपयोग एमसीडी कार्यालयों के रूप में किया जाता है। अब इस गेट को स्वतंत्रता सेनानी वैध किशन लाल के नाम से जाना जाता है। लोगों का कहना है कि ज़्यादातर लोगों को पता ही नहीं है कि नज़फगढ़ भी हवेलियों का केन्द्र रह चुका है। यह शहर मुग़ल अधिकारी मिर्ज़ा नजफ ख़ान के नाम से जाना जाता है। आधुनिकता के बोझ तले इसकी विरासत लुप्त होती जा रही है। इस गेट पर प्रथम विश्व युद्ध के शहीदों की स्मृति में एक पट्टिका लगाई गई थी, जो कि टाइलों से ढंक गई है। इसकी हालत इतनी दयनीय है कि जगह जगह ये टाइल्स निकल गईं हैं। एंट्री की जगह पर लोहे की पट्टी लटक रही है। दिल्ली टूरिज़्म की वेबसाइट पर इसके बारे में कोई ज़िक्र नहीं है। अब चाहकर भी दोबारा इमारतों को संजोया नहीं जा सकता है। मितराऊं गांव में 18वीं शताब्दी में बनी हवेली की हालत दयनीय हो गई है। पहले जिस हवेली में कचहरी लगती थी, अब यह कूड़ाघर बनकर रह गई है। माना जाता है कि राजा दयाराम सिंह गहलौत के छोटे बेटे लक्ष्मण सिंह गहलौत ने हवेली का निर्माण 1842 में करवाया था। बाद में अंग्रेज़ दिल्ली की पहली कचहरी के रूप में हवेली का इस्तेमाल करने लगे। वर्तमान में यह दो मंज़िला बनी हवेली अब खण्डहर हो गई है। अनिल डागर का कहना है कि समय रहते हवेली की देखभाई नहीं हुई है, तो यह सिर्फ इतिहास के पन्नों में रह जाएगी। इस पर राजस्थान की हवेलियों की तर्ज़ पर नक्काशी की गई है। लोगों ने बताया कि ठाकुर दयाराम सिंह की समाधि की हालत भी दयनीय हो गई थी, लेकिन उनके वारिसों ने इसकी मरम्मत करवाई। सरकार की तरफ से कोई मदद की जाए, तो इस हवेली को भी बचाया जा सकता है।

संपादकीय

शांति मिशन

सीरते फ़ख़्रे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पैग़ाम

इस्लाम एक मुकम्मल निज़ामे हयात है जो इंसानों को रास्ता दिखाने के लिए दो चीज़ों को हिदायत का ज़रिया बताया है। एक अल्लाह का कलाम है और दूसरा नबीए पाक सल्लल्ललाहो अलैहि वसल्लम की सीरते पाक, इस तरह कहा जा सकता है, इंसानी ज़िन्दगी की सही राह की बुनियाद क़ुरआन-ए-करीम और अहादीस नबवी सल्लल्ललाहो अलैहि वसल्लम पर है और यह दोनों ही इंसान के लिए एक कामिल हिदायत की हैसियत रखती हैं। नबीए अकरम सल्लल्ललाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान उनकी सीरत मुबारका को राहे अमल मानते हुए उसकी पैरवी करना इस्लामी अक़ाएद का एक लाज़िमी हिस्सा है आपकी ज़ाते-गिरामी से मुहब्बत और आप की इताअत हर मोमिन पर वाजिब और ज़रूरी हैं। अल्लाह तबारक व तआला का इरशाद है :-

सो कसम है तेरे रब की वह मोमिन न होंगे यहां तक कि तुझ को मुंसिफ जानें इस झगड़े में
जो उनमें उठें फिर नपावें अपने जीमें तंगी तेरे फैसले से और क़बूल कर लो ख़ुशी से।

(तर्जुमा शेखुल हिंद, सूरह, निसा, आयत 65)

एक दूसरी जगह इरशाद गिरामी है :

''अल्लाह ने एहसान किया ईमान वालों पर जो भेजा उनमें रसूल उन्हीं में का पढ़ता है, उन पर आयतें उसकी और पाक करता है उनको यानि शिर्क वगैरह से और सिखलाता है किताब और काम की बात और वह तो पहले खुली गुमराही में थे।'' (सुरा आले इमरान आयत 146)

हक़ीक़त यह है कि आप सल्लल्ललाहो अलैहि वसल्लम की हयात मुबारका क़ुरआन करीम की अमली तस्वीर है और यह पाक परवर दिगार का हम पर ज़बरदस्त एहसान है कि उसने अपने अहकामात का अमली नमूना बनाकर भेजा, आपने ज़ुल्म व जिहालत के अंधेरों से इंसानियत को निकाल कर फलाह व कामरानी के रास्ते पर चलाया, समाज के मजबूर और सताए हुए लोगों की आपने दादरसी की और तमाम वर्गों, यहां तक कि जानवरों तक के हुक़ूक़ आपने मोतअय्यन फरमाए। आप की हयात तैयबह पर निगाह डाली जाए तो आप कि सिफाते हमीदा, जिंदगी के हर क्षेत्र में नज़र आएंगी। मगर आपके औसाफे हमीदा में जो ख़ूबी है सबसे अधिक दिखती है, वह आप की नरम दिली और बुर्दबारी है, यह आप सल्ल० की नरम मिजाज़ी ही थी जिसने सदियों से ज़लालत और गुमराही में पड़े हुए समाज में बेहद सख़्त दिल इंसानों के दिलों में न सिर्फ नरमी पैदा कर दी बल्कि उनके दिलों को मोसख़्खर कर डाला ओर अपने अच्छे व्यवहार से आप सल्ल० फातहे ज़माना कहलाए। नबी की हैसियत से आप मोरब्बी और मुअल्लिम भी थे, दाई और वाइज़ भी थे, काएद, कमांडर और हाकिम भी थे, शौहर भी थे और रिश्तेदारों के रिश्तेदार भी थे, मगर आपकी नर्म गुफ़्तारी और हिल्म का पहलू आप सल्ल० के तमाम मामलात और संबंध में हमेशा ऊपर और साफ दिखता था।

आप सल्ल० की आमद से पहले, रबीउल अव्वल की सुबह से पहले इंसानियत गिरावट व पस्ती के जिस दर्जा को पहुंच चुकी थी, उसके ख़्याल से ही दिल दहल जाएंगे। आखरी दर्जे की बात यह है कि ओमरा ओर रोवसा अपनी दावतों और खुशियों की महफिलों में रोशनी करने के लिए ज़िन्दा इंसानों को खंभों से बांध कर उनके जिस्मों पर तेल छिड़क कर जलाते थे, उनकी चीख व पुकार और रोने चिल्लाने की आवाज़ों में उनको मौसिक़ी का मज़ा आता था और उस पर फख़्र किया जाता था कि फलां के यहां इतने गुलाम जलाए गये। आप सल्ल० की ज़ात इस क़ायनात में हुस्न व एहसान और जमाल व कमाल का सबसे बड़ा पैकर है, जिस से अधिक सूरत, सीरत और कमाले ज़ाहिर व बातिन का अद्भूत इंसानी नमूना, ख़ालिक व मालिक ने कोई और नहीं बनाया।

आप सल्ल० ही की व ज़ाते गिरामी है जिस पर बारी तआला अपनी रहमतें भेजता है और फरिश्ते उस के लिए दुआ करते हैं इतना ही नहीं बल्कि जिन लोगों ने आप सल्ल० को अपना नबी माना, आप पर और आप पर नाज़िल होने वाली किताब पर ईमान लाए, उनको भी हुक्म हो रहा है कि तुम उन पर दुरूद व सलाम भेजो, अल्लाह ने अपने इस महबूब को जिसको हर ऐतबार से इंसानियत का कामिल व मुकम्मल नमूना बनाया, मेराज में अपने पास सातवें आसमान पर सिदरतुल मुन्तहरा तक बुलाया जहां जिब्रईल अलैहिस्सलाम को भी आने की इजाज़त नहीं थी।

क़यामत के दिन जब नफसा-नफ़सी का आलम होगा, अर्शे ख़ुदावंदी की दाहिनी ओर आप सल्ल० के लिए कुर्सी लगाई जाएगी, उस पर रसूले पाक तशरीफ फरमा होंगे आपके हाथ में हम्द का झडा होगा और अंबिया और अतक़िया को आप सल्ल० पर रश्क़ आएगा। आप सल्ल० के इस शरफ व बलंदी का राज़ यह है कि आप सल्ल० तमाम अंबिया के सिफआत के जामेअ और ख्वातमुल अंबिया है। आप सल्ल० आलम में ख़ुदा की तालीम व हिदायत के शाहिद है, नेकों को फलाह व सआदत की खुशख़बरी सुनाने वाले मुबश्शिर हैं उनको जो अब तक बेख़बर थे, होशियार ओर बेदार करने वाले नज़ीर हैं, भटकने वाले मुसाफिरों को ख़ुदा की ओर पुकारने वाले दाईं हैं और ख़ुद हमातन नूर और चिराग़ है।

इस समय इंसानों का कौन सा तबक़ा है जिस पर आपका बराहे रास्त एहसान नहीं। क्या मर्दों पर आप सल्ल० के एहसान नहीं कि उनको आदमियत की तालीम दी, क्या औरतों पर आप सल्ल० का एहसान नहीं कि आप सल्ल० ने उनके हुक़ूक़ मां, बहन, फूफी, ख़ाला की सूरत में कहकर दिया, फरमाया कि ''मां के क़दमों के नीचे जन्नत है'' ख़ाला का दर्जा मां के बराबर है, कमज़ोरों पर जो ज़ुल्म की चक्की पिसते रहे यह कहकर एहसान किया कि मज़लूम की बददुआ से डरो कि उसकी आह व कराह और ख़ुदा के दरमियान कोई पर्दा नहीं, क्या हाकिमों और बादशाहों पर आप सल्ल० का एहसान नहीं कि उनके हुक़ूक़ व फराएज़ बताने के बाद फरमाया ''इंसाफ़ पसंद हाकिम बादशाह क़यामत के दिन अल्लाह तआला के अर्श के साए में होगा।'' क्या ताजिरों और कारोबारी लोगों पर आप सल्ल० का एहसान नहीं की आप सल्ल० ने फरमाया ''मैं और सच्चा व दयानतदार ताजिर जन्नत में करीब-करीब होंगे।'' ख़ुद भी तिजारत करके ताजिरी की इज्ज़त बढ़ाई, क्या आप सल्ल० ने यह नहीं फरमाया, ''हर जानदार मख़लूक़ को खिलाना पिलाना भी सदक़ा है, क्या सारी दुनिया पर आप सल्ल० का एहसान नहीं कि सब से पहले दुनिया ने आप सल्ल० ही की ज़बान से सुना कि ख़ुदा किसी देश, क़ौम, नस्ल और बिरादरी का नहीं, सारे जहानों और दुनिया के सब इंसानों का है।

रबीउल अव्वल का महीना आता है तो हमारी रगे़ मुहब्बत फड़कने लगती है कहीं मिलादुन्नबी के पुररौनक़ जलसों का इनएक़ाद होता है, कहीं उलेमा -ए-कराम की तक़रीरों और नआतों के प्रोग्रामों और मुशायरा से फिज़ा गूंजने लगती है लेकिन क्या हमने कभी सोचा कि वह ज़ाते गिरामी जिस से इंसानियत का सर ऊंचा हुआ नाम रोशन हुआ, अगर आप सल्ल० की मिसाली शख़्सियत न होती तो इंसानियत जिस आलमगीर अंधेरों में भटक रही थी और जिसमें इंसान, इंसान का खून चूस रहा था, ताक़तवर कमज़ोर को खा रहा था तो इंसानियत का आख़िर क्या अंजाम होता।

आज जब हम अपने मौजूदा समाज पर नज़र डालते हैं तो साफ नज़र आ जाता है कि वही रस्मो रिवाज़ के बंधन, ज़ात बिरादरी की तकसीम, इंतक़ाम की सुलगती हुई आग, नफरत व अदावत के तूफ़ान छोटी छोटी बात पर टोपियां उछालना, आज हमारे समाज का हिस्सा है जिन से नबी-ए- अकरम सल्ल० को लड़ना पड़ा था और आपके फैज़ और रात दिन की कोशिशों के नतीजे में एक ऐसा समाज बदल गया जो एक लम्बे समय तक इस्लाम के दुश्मनों तक को अपने एतराफ पर मजबूर करता रहा है, बेशक आज के हालात उम्मत के लिए एक चुनौती है इसलिए विलादत का रस्मी जश्न मनाने के बजाय हमें आपकी सीरते मुबारका के तमाम पहलुओं और आप की हयात मुबारका के चौतरफा नमूनों को न सिर्फ सामने लाने बल्कि उसे आंदोलन का रूप देकर हर-हर घर तक पहुंचाने की ज़रूरत है।

याद रखिए, हम जब तक ज़िन्दगी के हर मैदान में सीरते पाक के नमूनों को नहीं अपनाएंगे उस समय तक मुकम्मल दीन हमारी ज़िन्दगी में नहीं आ पाएगा यही आप की सीरते पाक का पैग़ाम है और उसी में हमारे तमाम मसाएल का हल है।

तारीख़े इस्लाम

ख़ुतबाते सीरते तैयिबा

मुफ़्ती मुहम्मद सलमान मंसूरपुरी किस्त-94

मक्का मुअ़ज़्ज़मा में फ़ातिहाना दाख़िला

एक वक़्त वह था जब आप लोगों से छुप कर यहाँ से निकले थे, और यहाँ के लोग आप के जानी दुश्मन थे और आप को क़त्ल करने का प्लान बनाये हुए थे, और एक आज का वक़्त है कि शहंशाहे कौनैन सरकारे दो आ़लम मुहम्मद अ़रबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पूरी शान व शौकत और जाह व जलाल के साथ अल्लाह के घर में दाख़िल हो रहा है, अल्लाह तआला ने ऐसी फ़तह व नुसरत फ़रमाई, और जिस फ़तहे मुबीन का वादा सुलहे हुदैबिया के मौक़े पर किया गया था अल्लाह तआ़ला ने वह फ़तहे मुबीन पूरी इज़्ज़त व इकराम के साथ पूरी फ़रमाई। और इसके साथ एक और भी मुज़्दा सुनाया गया था कि आप के अगले पिछले सब गुनाह माफ़ हैं, क़ुरआन में यह ऐलान किया गया। हालांकि हमारा यह अ़क़ीदा है कि पैग़म्बर अ़लैहिस्सलाम से कोई गुनाह नहीं हो सकता, फिर अल्लाह तआ़ला ऐलान फ़रमा रहा है कि अगले पिछले सब माफ़ हैं। (अल बिदाया वन्निहाया जि. 4 स. 684,686, बुख़ारी शरीफ़, 2/614)

शफ़ाअ़ते कुबरा

कुछ लोगों ने तो यह फ़रमाया कि इस से मुराद उम्मत के गुनाह हैं: लेकिन बात यह नहीं है बल्कि इस फ़तहे मक्का और आयत का तअ़ल्लुक़ शफ़ाअ़ते कुबरा से है, मैदाने महशर और क़यामत से है कि जब तमाम आलम के लोग इनसान और जिन्नात एक मैदान में जमा होंगे, और अल्लाह तआ़ला के ग़ैज़ व ग़ज़ब और जाह व जलाल का यह हाल होगा कि किसी को दम मारने की हिम्मत न होगी, और हिसाब व किताब में देर हो रही होगी, लोग तमन्ना करेंगे कि अल्लाह के दरबार में कोई सिफ़ारशी हो और हिसाब व किताब शुरू हो, जहाँ पहुंचना है पहुंचें, वफ़्द बनाया जायेगा, लोग सैयदना हज़रत आदम अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के पास जायेंगे, वह कहेंगे कि मेरे बस की बात नहीं है, जन्नत के अंदर मैंने वह पेड़ खा लिया था जिस से रोका गया था, फ़ाइल खुल गई तो जवाब देना भारी होगा, अल्लाह तआ़ला को आज ऐसा जलाल है कि कभी नहीं आया, लेकिन तुम लोग हज़रत नूह अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के पास जाओ, वह भी कहेंगे कि नहीं, हमने अपने काफ़िर बेटे की सिफ़ारिश की थी, ऐसा न हो कि आज वह फ़ाइल खुल जाये और अल्लाह तआ़ला सवाल करलें कि तुम ने सिफ़ारिश क्यों की, तो क्या होगा? लेकिन तुम लोग हज़रत इबराहीम अ़लैहिस्सलाम के पास जाओ, वह भी हाथ हिला देंगे कि मैंने अपनी बीवी को कह दिया था कि यह मेरी बहन है, मैंने लोगों से कह दिया था जब कि वह मेले में ले जा रहे थे कि मैं बीमार हूँ, अगर आज फिर वह बात खुल गई तो क्या होगा? तुम लोग हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के पास चले जाओ, मूसा अ़लैहिस्सलाम फ़रमायेंगे कि मुझ से क़िब्ती का क़त्ल हो गया था, अगर अल्लाह ने सवाल कर लिया तो क्या होगा? तुम लोग हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के पास जाओ, वह कहेंगे कि लोगों ने मुझे माबूद बना लिया, आज वह बात खुल गई तो क्या होगा, जाओ मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास जाओ। (जारी)

ग़फ़्फ़ार ख़ान को भारत ने भूल जाना चुना

राजमोहन गाँधी

अफग़ानिस्तान में इस समय राजनीतिक व सामाजिक संकट गहरा रहा है, हालात ख़राब होते जा रहे हैं। ऐसे समय में महात्मा गांधी के पोते राजमोहन गांधी की किताब 'ग़फ़्फ़ार ख़ान : नॉनवाइलेंट बादशाह ऑफ द पख्तूंस' आई है। यह किताब अफग़ानिस्तान और अविभाजित भारत में अपना गहरा असर छोड़ने वाले नेता ख़ान अब्दुल गफ़्फ़ार खान पर है। इस मौके पर किताब के लेखक राजमोहन गांधी से एक विशेष बातचीत हुई, पेश है इस बातचीत के प्रमुख अंश :-

सवाल:- अक्सर कहा जाता है कि इतिहास की हर किताब का अपना एक इतिहास होता है जो अपने आप में इतिहास के कोनो को देखने की एक मुकम्मल यात्रा होती है। इस पुस्तक की रचना प्रक्रिया की यात्रा क्या थी?

जवाब:- आप ठीक कहते हैं कि हर किताब की एक यात्रा और इतिहास होता है। मेरी इस किताब की शुरुआत तब से होती है जब मैं 10 वर्ष का था। मेरे पिता जी गांधी जी के चौथे बेटे देवदास गांधी दिल्ली में हिन्दुस्तान टाइम्स के संपादक थे। उस समय बादशाह खान हमारे घर दो बार रुके। तब से मेरा उनसे संबंध रहा। 1969 में उनका एक ज़बरदस्त भाषण हुआ, जिसमें उन्होंने ग़रीबी भ्रष्टाचार और नागरिक अधिकारों के हनन पर बहुत प्रभावी बातें कहीं थीं। फिर 1987 में देहांत से एक साल पहले इलाज के सिलसिले में वह मुंबई आए थे, तब भी कुछ बातें हुई थीं। 2001 में मैं पाकिस्तान गया और असफंदयार ख़ान, जो बादशाह ख़ान के पोते हैं, उनसे मिला। उन्होंने कहा कि बहुत अफसोस है कि कोई अच्छी बायोग्राफी बादशाह ख़ान की नहीं है। तब मुझे लगा कि मुझे उन पर काम करना चाहिए। उन पर बहुत दस्तावेज़ मौजूद नहीं थे, लेकिन अमेरिका के इलिनॉय विश्वविद्यालय की लाईबेरी में मुझे उनकी लिखी आत्मकथा मिल गयी। उससे भी मुझे किताब लिखने में मदद मिली। एक और चीज़ मैं बताना चाहूंगा, मेरे पिता जब 31-31 वर्ष के थे, तब वे दोनों जेल में साथी ही रहे थे। उन दोनों का जो संबंध था, उसकी भी मेरे किताब लिखने के पीछे एक भूमिका है।

सवाल:- ग़फ़्फ़ार ख़ान ने इस उपमहाद्वीप को किन मूल्यों, आदर्शों और सिद्धांतों को विरासत में सौंपा है? आपने यह भी लिखा है कि बाद की पीढ़ियों ने बादशाह ख़ान को भुला दिया। क्यों और कैसे?

जवाब:- जिस उद्देश्य के लिए उन्होंने अपना जीवन जिया, उनमें निर्भीकता, त्याग, तकलीफ के लिए तैयार रहना और अहिंसा प्रमुख है। दुनिया में जेल में सबसे लंबे समय तक रहने का उनका रिकॉर्ड है। 1997 में उनके देहांत से एक वर्ष पहले उनसे मैं मिला, तो उन्होंने कहा कि कुरआन में जो एक शब्द सबसे ज़्यादा है - सब्र, सब्र करो। बादशाह ख़ान की राय में अहिंसा और धैर्य का एक दूसरे से ज़बरदस्त संबंध है। 1947 में जब उनके इलाक़े में हिंदू और सिक्खों पर अत्याचार हुए, इसके ख़िलाफ़ वह एकजुट हुए। हम सब जानते हैं कि इस वक़्त अफ़ग़ानिस्तान में क्या हो रहा हो। आज अगर बादशाह ख़ान होते तो इंसान की आज़ादी, सब लोगों में दोस्ती और मानवाधिकारों के पक्ष में निस्संदेह उनकी मज़बूत आवाज़ हम सुनते। गांधी जी का कथन 'ईश्वर-अल्लाह तेरो नाम' बादशाह का भी था। हिंदू-मुसलमान- सिख, हम सबको एक ज़मीन में साथ रहना है, आपसी भाईचारा और दोस्ती को क़ायम रखना है। अब जो आपका

जिस उद्देश्य के लिए उन्होंने अपना जीवन जिया, उनमें निर्भीकता, त्याग, तकलीफ के लिए तैयार रहना और अहिंसा प्रमुख है। दुनिया में जेल में सबसे लंबे समय तक रहने का उनका रिकॉर्ड है। 1997 में उनके देहांत से एक वर्ष पहले उनसे मैं मिला, तो उन्होंने कहा कि कुरआन में जो एक शब्द सबसे ज़्यादा है वह है सब्र।

प्रश्न है कि क्यों उन्हें लोग भूल गए हैं, ये कैसे हुआ, तो इसके उत्तर से पहले मैं कहूंगा कि जब उनका देहांत 98 वर्ष की हुआ, उस समय अफग़ानिस्तान में सोवियत सेना मौजूद थी। उसमस सब लोगों ने एक सीजफायर किया और पाकिस्तान और अफग़ानिस्तान, दोनों ही मुल्कों में शौक था। हज़ारों लोग पाकिस्तान के पख़्तून इलाके से ख़ैबर पार करते हुए अफग़ानिस्तान पहुंचे। उनकी अन्तिम यात्रा बहुत ज़बरदस्त थी। लोग उन्हें इसलिए भूल गए हैं, क्योंकि अफग़ानिस्तान में और उस इलाक़े में अब बहुत कुछ हो चुका है। 9/11 अमेरिका का वहां पहुंचना, ओसामा बिन लादेन, इतनी बड़ी ख़बरों का असर दुनिया भर में हुआ, तो लोग कुछ हद तक बादशाह ख़ान को भूल गए। एक और भी कारण है - बादशाह ख़ान हिंदू नहीं थे। वह मुसलमान थे। यह भी एक वजह है कि हमारे प्यारे भारत देश में उन्हें भुला दिया गया है।

सवाल:- खुदाई ख़िदमतगार की अवधारणा पर अगर आप हमारे पाठकों को थोड़ा बता सकें, कि उनके सिद्धांत क्या थे?

जवाब:- 1929-30 में इस संस्था की स्थापना हुई। इस शब्द को थोड़ा और खोलें तो इसका मतलब है खुदा की सेवा करना, मतलब इंसान की सेवा करना। आज़ादी के लिए लड़ने, अहिंसा और धार्मिक एकता इसकी प्रतिबद्धता थी। इससे ही खुदाई ख़िदमतगार की बुनियाद तैयार हुई। इसके बारे में कुछ पढ़ने लायक़ किताबें भी उपलब्ध है। यह इतिहास का एक बहुत हिस्सा है।

सवाल:- आपका मत है कि ग़फ़्फ़ार ख़ान और मोहनदास करमचंद गांधी आत्मिक भाई थे। दोनों विवेक और साहस के बल से लैस थे। एक क़िस्सा पढ़कर हैरानी होती है कि बादशाह ख़ान चाहते थे कि गांधी प्रधानमंत्री बन जाएं। गांधी जी की उनके राजनीतिक और व्यक्तिगत जीवन पर क्या छाप है..?

जवाब:- जी, मैंने लिखा है कि महात्मा गांधी और बादशाह ख़ान शारीरिक भाई भले नहीं थे, लेकिन भाई थे। गांधी जी ने कभी यह नहीं कहा कि मेरी वजह से बादशाह ख़ान कुछ कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि वह मेरे कॉमरेड है, मेरे साथी हैं। उनका रिश्ता दो भाईयों, दोस्तों और सैनिकों का रिश्ता था। 1919 के रोलेट सत्याग्रह के ख़िलाफ़ गांधीजी ने देशभर में सत्याग्रह का आहवान किया था तो बादशाह ख़ान भी उससे जुड़ गए थे। नमक सत्याग्रह में सबसे ज़बरदस्त सत्याग्रह 1930 में पेशावर में हुआ, जहां बादशाह ख़ान को गिरफ्तार कर लिया गया। तब खुदाई खिदमतगार ने बिल्कुल अहिंसक संघर्ष किया, जो इतना जोरदार था कि अंग्रेजों के कहने के बाद भी सेना ने गोली नहीं चलाई। उसका असर यह हुआ कि सत्याग्रह के सामने अंग्रेज सरकार भी काम नहीं कर सकी। बिहार और नोआखली में 1946 में जब सांप्रदायिक दंगे हुए, उस वक़्त बादशाह ख़ान और गांधी साथ-साथ वहां गए थे। साथ साथ उन्होंने बिहार में काम किया और अंत तक उनका एक दूसरे के साथ संबंध रहा। ❑❑

नये विदेश सचिव को लेकर जयशंकर-डोभाल में ज़ोर आज़माइश

वर्तमान विदेश सचिव हर्षवर्धन श्रृंगला के 2022 की गर्मियों में सेवानिवृत्त होने के साथ, उनके उत्तराधिकारी को लेकर विदेश मंत्रालय में पहले से ही अटकलें लगाई जा रही हैं। अगले विदेश सचिव को लेकर नाम चल रहे हैं। एक वाशिंगटन में हमारे राजदूत तरनजीत संधू का है चूंकि अमेरिका वर्तमान में भारत का सबसे महत्वपूर्ण सहयोगी है, संधू अपने अनुभव और वाशिंगटन में संबंधों के कारण, विदेश सचिव के पद के लिए सबसे उपयुक्त प्रतीत होते हैं। माना जाता है कि संधू के विदेश मंत्री एस. जयशंकर के साथ भी घनिष्ठ संबंध हैं। दूसरा नाम विनय क्वात्रा का है। उनकी योग्यता फ्रांस में राजदूत के रूप में उनका कार्यकाल और नेपाल में राजदूत के रूप में उनका वर्तमान कार्यकाल है।

बेशक, फ्रांस भारत का एक मूल्यवान मित्र है। लेकिन नेपाल में क्वात्रा ने राजदूत रहते हुए चीन के बढ़ते प्रभाव को कम करने का काम किया है और वह राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल के काफी नज़दीकी माने जाते हैं, डोभाल को प्रधानमंत्री मोदी की पड़ोसी देशों को लेकर नीतियों को लागू करने में सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। विदेश मंत्रालय के हलकों में इस बात की चर्चा है कि अगले विदेश सचिव की नियुक्ति से जयशंकर और डोभाल के बीच परदे के पीछे तकरार हो सकती है। श्रृंगला के उत्तराधिकारी के चुनाव से साफ होगा कि मोदी सरकार में कौन अधिक शक्तिशाली है। बेशक, मोदी सरप्राइज देना पसंद करते हैं। यह बहुत संभव है कि वह अपने पिटारे से कोई दूसरा नाम निकाल कर सबको चौंका दें।

क्या कांग्रेस में शामिल हो सकते हैं वरुण गाँधी

क्या वरुण गांधी कांग्रेस में शामिल हो सकते हैं? भाजपा के गलियारों में अटकलें लगाई जा रही हैं कि यूपी विधानसभा चुनाव से कुछ समय पहले गांधी परिवार का सबसे कम आयु का सदस्य कांग्रेस का दामन थाम सकता है। लखीमपुर खीरी त्रासदी के उनके महत्वपूर्ण आलोचनात्मक टवीट पहला सार्वजनिक संकेत है कि वरुण और मोदी/शाह की जोड़ी के बीच सब ठीक नहीं है। वह तब तक चुप्पी साधे रहे जब तक उनकी मां मेनका गांधी मोदी कैबिनेट में मंत्री थीं। मोदी के दूसरे कार्यकाल में उन्हें मंत्री के रूप में शामिल नहीं किए जाने के बाद, वह इस उम्मीद में लो प्रोफाइल बने रहे कि जब पीएम अपने मंत्रिमंडल का विस्तार करेंगे तो वह अपनी मां की जगह हासिल कर लेंगे। वास्तव में, मोदी कैबिनेट के बड़े फेरबदल से ठीक पहले, वरुण का नाम एक संभावित नए आगंतुक के रूप में चर्चा में था, लेकिन ऐसा नही हुआ। ऐसा लगता है कि वरुण ने अब भाजपा में कोई पद पाने की उम्मीद खो दी है और जब वह भाजपा की नैया से कूदने के लिए तैयार दिख रहे हैं यह सर्वविदित है कि उन्होंने अपने भाई/बहन विशेष रूप से प्रियंका के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखा है, वरुण गांधी के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने कुछ समय पहले प्रियंका और उसके परिवार के साथ विदेश में छुट्टियां मनाई थीं। भाजपा के हलकों में हमेशा यह रहा है कि उनका कांग्रेस में जाना तय ही था, शायद यही वजह है कि उनको कभी भी शाह/मोदी ने अपने भरोसे के लायक़ नहीं समझा। कांग्रेस उनके लिए संभावित ठीकाना हो सकता है। उनके लोकसभा क्षेत्र का बड़ा हिस्सा तराई पट्टी है जहां सिखो की आबादी अच्छी ख़ासी है। उनकी मां मेनका सिख समुदाय से आतीं हैं। वास्तव में पीलीभीत में सिख दूसरे सबसे बड़े मतदाता समूह हैं। कृषि कानूनों को लेकर किसानों का विरोध ओर अब लखीमपुर खीरी में एक भाजपा केन्द्रीय मंत्री के बेटे के स्वामित्व वाली कार ने चार सिख किसानों को कुचल दिया, की यह घटना ने सिख समुदाय को मोदी सरकार के ख़िलाफ कर दिया है। वरुण अच्छी तरह जानते हैं कि अगर वह भाजपा के टिकट पर खड़े होते हैं अगले चुनाव में सिखों के समर्थन पर पूर्ण भरोसा नहीं कर सकते। तथ्य यह है कि उनकी मां एक सिख हैं, इसी कारण से वरुण लखीमपुर खीरी त्रासदी पर किसानों का समर्थन में पार्टी लाइन के ख़िलाफ़ जाकर बात करने का दबाव में थे। अगर कांग्रेस अगले साल पंजाब में जीत हासिल करती है, तो वरुण के लिए आगे का रास्ता साफ हो जाएगा।

कांग्रेस में बदलाव भीतर से ही आना है

कुछ साल पहले कांग्रेस के एक दूरदृष्टा नेता ने भविष्यवाणी की थी कि एक सामान्य कार्यकर्ता अपने सबके अस्तित्व के लिए पार्टी को बचाएगा जब उन्हें लगेगा कि उनके नेता अप्रभावी हो गए हैं। ऐसा दिखाई देता है कि जैसे वह पल अब आ गया है। पार्टी हांफ रही है और इसे मज़बूत नेतृत्व से ऑक्सीजन की ज़रूरत है लेकिन यही वह चीज़ है जिसका अभाव है इसलिए छोटी खुराकों के साथ कार्यकर्ताओं को बदल बनना होगा।

यद्यपि यह विचार कि एक ऐसी पार्टी जो मुश्किल से सांस ले पा रही है, अचानक आगामी आम चुनावों में सत्ताधारी भाजपा का मुक़ाबला करने के लिए तैयार हो जाएगी, लगभग एक चमत्कार जैसा ही होगां इसके बीच बहुत से किंतु परंतु हैं लेकिन यह मज़बूत नेतृत्व के साथ संभव है। एक अन्य महत्वपूर्ण चीज़ यह है कि कांग्रेस को खुद से बचाना है। कांग्रेसी आमतौर पर कहते हैं कि कांग्रेस को केवल कांग्रेसियों द्वारा ही पराजित किया जा सकता है।

धड़ेबंदी तथा क्षरण से पीड़ित वैभवशाली प्राचीन पार्टी अब वेंटीलेटर पर है। यह गांधी परिवार के बिना अथवा उनके साथ कार्य करने में अक्षम है। शीर्ष पर खालीपन ने क्षेत्रीय क्षत्रपों को राष्ट्रीय नेतृत्व पर प्रश्न उठाने को प्रोत्साहित किया है। 2014 की पराजय के बाद से पार्टी अपना सिर उठाने के क़ाबिल नहीं हैं। पार्टी ने 2014 के बाद से न केवल 2 लोकसभा तथा कई राज्य विधानसभा चुनाव हारे हैं बल्कि उन राज्यों में भी सत्ता बनाए रखने में असफल रही है जहां इसने सरकारें बनाई थीं। जब 1977 के लोकसभा चुनावों में इंदिरा गांधी नीत कांग्रेस की निर्णायक पराजय हुई थी तब दक्षिण भारतीय राज्य इसके साथ खड़े थे। अब तो दक्षिण ने भी पार्टी को छोड़ दिया। वर्तमान में पार्टी केवल तीन राज्यों में है -छत्तीसगढ़, पंजाब तथा राजस्थान। झारखंड तथा महाराष्ट्र में यह सरकार में गठबंधन सांझीदार है।

मगर कड़वी सच्चाई यह है कि पार्टी नए राजनीतिक परिदृश्य से बुरी तरह से दूर है। इससे भी ख़राब बात यह कि आगे देखने की बजाय यह पीछे की ओर देख रही है। यह हर किसी की पार्टी बनने का प्रयास कर रही है जबकि वास्तव में यह किसी की भी पार्टी नहीं है। पीढ़ी दर बदलाव की लड़ाई में नेतृत्व का संकट भी अब ज़ाहिर हे।

यह हमें इस सवाल की ओर ले आता है कि क्या वैभवशाली प्राचीन पार्टी कांग्रेस शासित राज्यों में इतने अधिक नाटकों के साथ अपना अस्तित्व बनाए रख पाएगी, मुख्य रूप से सभी तीन राज्यों में गांधी भाई-बहन ने मुख्यमंत्री के ख़िलाफ अपने पसंदीदा लोगों के साथ विद्रोहियों को प्रोत्साहित किया है। पंजाब इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

पंजाब एक ऐसा राज्य है जहां पार्टी आसानी से जीत सकती थी। अमरेन्द्र सिंह को बड़े अटपटे ढंग से बाहर का रास्ता दिखा दिया गया जिससे राज्य में अस्थिरता पैदा हो गई। क़यामत की भविष्यवाणी करने वालों का कहना है कि पार्टी बहुत जल्दी राजनीतिक परिदृश्य से ग़ायब हो जाएगी। हालांकि कांग्रेस संभवत: इतनी जल्दी नहीं मरेगी। यदि प्रत्येक गांव में एक कांग्रेसी होगा चाहे वह आख़िरी हो, पार्टी अपने 'समाप्त' के दर्जे के साथ जीवित रहेगी।

इसका मतलब यह नहीं है कि पार्टी किसी अंत: विस्फोट का सामना नहीं कर रही। अफसोस की बात यह है कि कांग्रेस पार्टी को अब ख़तरा कांग्रेस विद्रोहियों से है न कि सत्ताधारी भाजपा से। कांग्रेस की समस्याओं में जिन चीज़ों ने वृद्धि की है वे हैं दल-बदल तथा कुछ प्रभावशाली नेताओं द्वारा पार्टी छोड़ना, जैसे कि ज्योतिरादित्य सिंधिया, जितिन प्रसाद तथा सुष्मिता देव, सभी टीम राहुल से हैं। राहुल की व्यक्तियों तथा मुद्दों को लेकर समझ पूरी तरह से ग़लत साबित हुई है। उनके पार्टी के पुन:गठन के प्रयोग भी असफल रहे हैं। गांधी भाई-बहन ने ग़लत घोड़ों पर दाव लगाए जिसके परिणामस्वरूप पार्टी में और अधिक दुविधा तथा अफरा तफरी पैदा हो गई।

इन परिस्थितियों में कांग्रेस को पुनजीर्वित करने का काम सुगम नही होगा मगर फिर भी एक राष्ट्रीय पार्टी के तौर पर कांग्रेस के लिए जगह बनी रहेगी। ऐसा तब होगा जब यह अपने वैचारिक घाट पा ले, अपने अतीत से प्रेरणा ले। युवाओं के साथ क़दम ताल करके चले तथा एक स्वीकार्य नेरेटिव तलाशे। इन सबके लिए अच्छे नेतृत्व की ज़रूरत है। सोनिया गांधी 2004 तथा 2009 में दो बार पार्टी को सत्ता में ला सकीं लेकिन वह अब लगभग सेवानिवृत्त है। गांधी भाई बहनों ने अपनी वोट आकर्षित करने की क्षमता नहीं दिखाई हैं। वे अपनी दादा इंदिरा गांधी की नक़ल करना चाहते हैं, बिना उनके नेतृत्व वाले गुणों के।

गाँधियों को समस्या की जानकारी है लेकिन उनके पास भाजपा का सामना करने के लिए रणनीति नहीं है। उन्हें यह बताया गया है कि वे केवल चुपचाप बैठे रहें और सत्ता खुद-ब-ख़ुद उनके पास आ जाएगी क्योंकि अन्य कोई विकल्प नहीं हैं बदलाव भीतर से ही आना है। कोई भी निर्णय लेने से पहले परिवार को अन्य से सलाह मशविरा करना होगा। आख़िरकार कांग्रेस कार्य समिति जैसी निर्णय लेने वाली शीर्ष इकाइयां हैं जो अधिकाधिक बैठकें आयोजित कर सकती हैं। वरिष्ठ नेताओं को या तो खुड्डे लाइन लगा दिया गया है अथवा उनका युग समाप्त हो रहा हैं अगले वर्ष फरवरी से शुरू होकर 02 सालों के दौरान 16 राज्यों में विधानसभा चुनाव होंगे। इन 16 राज्यों में से 09 भाजपा की सीधी दावेदारी हैं था 03 गठबंधन सरकारें हैं कांग्रेस के 03 तथा टी.आर.एस. के पास एक राज्य है।

विधानसभा चुनाव 2024 के लोकसभा युद्ध के लिए मैदान तैयार करेंगे। राष्ट्रीय स्तर पर ताक़त के लिए दौड़ में कांग्रेस एकमात्र अन्य घोड़ा है, हालांकि कोई फर्क नहीं पड़ता कि कितनी दूर है।❑❑

रोज़गार .....

बेहतर कैरियर का विकल्प इवेंट मैनेजमेंट

कोरोना काल में रोज़गार पर जो चोट पड़ी है, उससे उबरने में बहुत टाईम लग सकता है। एक अनुमान के अनुसार लगभग दो करोड़ नौकरियां कोरोना काल की भेंट चढ़ गई, लोग परेशान हैं रोज़गार के लिए ऊपर से बढ़ती महंगाई ने जीना दुभर कर दिया है। बहुत से लोग नौकरी छोड़कर अपनी कंपनी खोल अपना बिजनेस करने की ओर मुड़ गए हैं जो एक अच्छा मूव ही कहा जाएगा। रोज़गार के अनेक क्षेत्रों में एक है, इवमेंट मैनेजमेंट! इसमें छोटी बड़ी कंपनियों के सैकड़ों, इवेंट मैनेज किए जाते हैं। कारपोरेट, डीलर्स मीट, वेडिंग, फैशन शोज, प्रोडक्ट लांच, आर्टिस्ट एंड सेलिब्रेटी मैनजमेंट के अलावा कास्टिंग का काम भी भली प्रकार से किया। यह बहुत ही एक्साइटिंग फील्ड है जहां बहुत तरह की चीज़ें सीखने और करने को मिलती हैं। कुल मिलाकर इवेंट मैनेजमेंट कलात्मक और सृजनात्मक सोच से मेल खाता हुआ फील्ड है। इवेंट मैनेजमेंट मार्केटिंग और एडवरटाइजिंग का मिला जुला रूप है, जो उत्साह और रोमांच से भरपूर है। यह कमाल की फील्ड है इसमें विजुअलाइजेशन है, क्रिएटिव है, प्लानिंग हैं, वैन्यू मैनेजमेंट है और भरपूर एक्साइटमेंट है।

नेचर ऑफ वर्क

इवेंट मैनेजमेंट का काम अलग अलग तरह के कामों को सही समय और पूरी तरह सटीकता के साथ जोड़ना है, जो इस काम को क्लाइंट के मुताबिक दिए गए समय पर और दिए हुए बजट में बिना किसी परेशानी या दुर्घटना के निपटा देता है वही सबसे सफल इवेंट मैनेजमेंट है। समय का दबाव हमेशा रहता है, क्वालिटी को लेकर हमेशा किच किच रहती है और सब कुछ ठीक ठाक होने के बावजूद कमी निकालने की गुंजाइश बची रहती है। इस काम का नेचर ही ऐसा है कि पसंद और नापसंद के बीच बड़ी बारीक रेखा होती है। इवेंट के आयोजन से पहले बजट को लेकर, वेन्यू को लेकर, मेन्यू को लेकर, सेलिब्रेटी को लेकर बड़ी आपाधापी मची रहती है। लेकिन यही आपाधापी इस काम का अनिवार्य हिस्सा है, जो काम पूरा होने पर सुकून और पैसा दोनों देती है।

स्किल्स/योग्यता

इवेंट मैनेजमेंट के काम में अलग अलग तरह के गुणों की जरूरत होती है और काम करते रहने से उनमें निरंतर सुधार भी होता रहता है। चाहे लीडरशिप क्वालिटी हो, या पीआर स्किल हो या मार्केटिंग स्किल हो, बजट बनाने का स्किल हो, रिस्क मैनेजमेंट स्किल हो, ये सारे स्किल्स इसमें काम आते हैं और उनमें निरंतर निखार भी आता रहता है।

हर व्यक्ति जो इवेंट मैनेजमेंट से जुड़ना चाहता है को यह पता होना चाहिए कि उसमें कौन-कौन से स्किल्स हैं, जिनकी ज़रूरत इस काम में पड़ती है और जिनके बिना इस काम में आना गैर समझदारी का निर्णय हो सकता है।

कोर्स

इसके प्रमुख कोर्स है - डिप्लोमा इन इवेंट मैनेजमेंट, पीजी डिप्लोमा इन इवेंट मैनेजमेंट, एडवांस्ड डिप्लोमा इन इवेंट मैनेजमेंट, पीजी डिप्लोमा इन इवेंट मैनेजमेंट एंड पीआर, पीजी डिप्लोमा इन इवेंट मैनेजमेंट एण्ड एक्टीवेशन जैसे पाठयक्रम हैं। इन पाठयक्रमों के तहत आप क्लाइंट सर्विसिंग एंड प्रेजेंटेशन स्किल्स, सेट डिजाइन, इवेंट प्लानिंग एंड कास्टिंग, इवेंट ब्रॉडिंग, प्रोडशन एवं तकनीक जैसे विषय पढ़कर इस फील्ड में महारत हासिल कर सकते हैं।

संभावनाएँ

एडिटवर्क्स स्कूल ऑफ मास कम्युनिकेशन के विशेषज्ञों के अनुसार जितनी जल्दी आप इवेंट के काम को समझ जाएंगे उतनी जल्दी आप इसमें कामयाबी हासिल कर लें। इसमें सबसे महत्वपूर्ण होता है क्लाइंट को संतुष्ट करना। अगर आपने यह कर लिया तो वारे न्यारे।

वेतन

इस क्षेत्र में शुरुआत में भले ही आपको बतौर वेतन 10 से 15 हजार रुपए तक ही मिले लेकिन लगन, मेहनत और कौशल की बदौलत आपकी सैलरी लाखों में हो सकती है।

प्रमुख संस्थान

एडिटवर्क्स स्कूल ऑफ मास कम्युनिकेशन

नेशनल इंस्टीटयूट ऑफ इवेंट्स

कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट, पुणे महाराष्ट्र❑❑

इस्लामी दुनिया

तालिबान का आरोप संपत्ति अनफ्रीज करने पर पश्चिम में चुप्पी

दोहा: तालिबान ने क़तर की राजधानी दोहा में यूरोपीय संघ के प्रतिनिधि मंडल के साथ बैठक के बाद कहा कि पश्चिमी देश अभी भी अंतर्राष्ट्रीय बैंकों में विदेशी अफग़ानिस्तान संपत्ति को अनफ्रीज नहीं कर रहे हैं। वे देश की सरकार के अनुरोध के जवाब में अब तक चुप्पी साधे हुए हैं। प्रतिनिधि मंडल में अमेरिका, नार्वे, इली, जर्मनी, फ्रांस, ब्रिटेन व स्वीडन समेत 15 यूरोपीय देशों के प्रतिनिधि शामिल रहे। तालिबान प्रवक्ता नईम ने कहा, 'विदेशों में जमा अफग़ानिस्तान की रक़म को वापस करना लोगों का अधिकार है लेकिन हमें अब तक कोई जवाब नहीं मिला है।

शियाओं पर हमला करने वाले एलईजे के 3 आतंकी मारे गए

लाहौर : पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में शिया अल्पसंख्यक समुदाय पर हमले में कथित रूप से शामिल लश्करे-झांगवी (एलईजे) के तीन आतंकियों को मार गिराया गया है। ये आतंकी पिछले अगस्त में लाहौर से लगभग 260 किलोमीटर दूर बहावलनगर में मुहर्रम के जुलूस पर हुए हमले में शामिल थे, जिसमें दो लोग मारे गए थे और 50 से अधिक लोग घायल हो गए थे।

पाक दुनिया के 10 बड़े कर्ज़दारों में और कर्ज़ मिलना मुश्किल

इस्लामाबाद : विश्व बैंक की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि पाकिस्तान उन शीर्ष 10 देशों में शामिल हो गया है, जिनके पास सबसे ज़्यादा बाहरी कर्ज़ है। रिपोर्ट के मुताबिक वह कोविड-19 महामारी के बाद ऋण सेवा निलंबन प्रक्रिया (डीएसएसआइ) के दायरे में आ गया है। इस वजह से उसे अब विदेशी कर्ज़ हासिल करने में मुश्किलें आ सकती हैं। विश्व बैंक जारी 2022 में अंतर्राष्ट्रीय ऋण सांख्यिकी का हवाला देते हुए, पाकिस्तानी अख़बार द न्यूज़ इंटरनेशनल ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि बड़े कर्ज़दारों समेत डीएसएसआइ की जद में आने वाले देशों को प्राप्त कर्ज़ की दर में व्यापक अंतर रहा है।

अब कुवैती सेना में भी महिलाएं लड़ेंगी युद्ध

कुवैत की सेना ने कहा कि महिलाएं अब सेना में युद्धक भूमिकाओं में भी शामिल हो सकती है। सालों तक सेना में सिर्फ नागरिक भूमिकाओं में सीमित रहने वाली महिलाओं के लिए यह पहला मौक़ा है। कुवैत उन खाड़ी देशों में है, जहां महिलाओं को समान अधिकार है।

मौलाना अख़्लाक़ हुसैन कासमी

अख़्लाक़ की ताक़त सब से बड़ा मोजेज़ा

रसूले अकरम सल्लल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मिशन हजराते अंबियाए कराम के मुक़ाबले में यह क़रार दिया गया था कि मुहम्मदे अरबी सल्लल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अख़्लाक़ी मोजजा से दीने तौहीद को ग़ालिब करेंगे। आप सल्लल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए रहमतुलिलआलमीन, साहेबे खलके अज़ीम और रऊफुर्रहीम के अवसाफे रहमत से आप के इसी मिशने रहमत की ओर इशारा किया गया है, सूरह फुस्सेलत की आयत नं॰ 34 में उसी मोजज़े की ओर हुज़ूर सल्लल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तवज्जोह दिलाकर दुश्मनों के साथ प्यार व मोहब्बत का सलूक करने की हिदायत की गयी है।

इस्लाम में जेहाद और तलवार डॉक्टर का नश्तर है जो कि डाकटर उसे ईलाज के आख़िरी समय में इस्तेमाल करता है, डॉक्टर पहले मरहम इस्तेमाल करता है, एंटीबायोटिक दवाएं इस्तेमाल कराता है और जब इलाज के यह सारे मरहले गुज़र जाते हैं और मरीज़ का जख़्म नहीं भरता तो फिर वह ऑपरेशन करता है और जिस्म के बीमार भाग निकाल कर फेंक देता है ताकि जिस्म का बाकी भाग स्वस्थ हो जाए।

अंबियाए साबेकीन की क़ौमों पर अज़ाब नाज़िल हुए, ख़ुदा तआला का फैसला यह हुआ कि अब साइंसी दुनिया में कोई अज़ाब नहीं आएगा। इसलिए आख़िरी नबी सल्लल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मिशन यह क़रार दिया गया कि वह मुहब्बत व रहमत की ताक़त से दीने हक़ को ग़लवा हासिल कराएं और रसूले आख़िर अपने इस मिशन में सफल हुए। रसूल अकरम सल्लल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ आप की सच्चाई की दलील के तौर पर माद्दी मोजेज़ात की कुव्वत से ज़्यादा अख़्लाकी ताक़त थी और अल्लाह तआला ने आप के अंदर अख़्लाक़ी ताक़त भरपूर पैदा की थी। इसलिए कुरआन करीम ने पूरी तारीख़े इंसानी को गवाह बनाकर कहा कि मुहम्मद सल्लल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खोलुके अज़ीम और अख़्लाक़े अज़ीम के मालिक हैं।

अख़्लाक़ी ताक़त का बड़ा अंसुर कुर्बानी है। यह इसार ही साहबे इसार के रहमोकरम की अमली शहादत है। रहम के ज़बानी दावे आसान हैं, अमली तौर पर रहमो मुहब्बत का सबूत ये है कि इंसान अपनी ज़रूरत पर दूसरे की ज़रूरत को ऊपर रखे, ख़ुद भूखा रहकर दूसरे को खाना खिलाए, अपनी ज़रूरतों को मारे, अपनी ख़्वाहिशात को मारे और दूसरे ज़रूरतमों, बीमारों, परेशान हालों के काम आए। रसूले पाक सल्लल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी ईसार की बेमिसाल नमूना थी, कुरआन ने हज़राते सहाबा के इसार की तारीफ की है, किसी जगह हुज़ूर के इसार की तारीफ नहीं की लेकिन शार्गिदों का कमाल दरअसल उस्ताद की तालीम व तरबियत का कमाल है।

सहाबा कराम में जो इसार आया वह अपने मुरब्बी रसूले पाक सल्लल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अख़्लाक़ी तरबियत से आया। सहाबा ग़रीबों को अपनी ज़रूरतों पर तरजीह देते थे, अगरचे वह खुद ज़रूरतमंद, और मुहताज होते। सहाबा कराम कुरैश अरब थे और वह बात-बात पर आपस में खूंरेजी करने के लिए प्रसिद्ध थे, यह इत्तेहाद और ईसार उस हैसियत से एक बड़ा कारनामा था, रसूले पाक सल्लल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का! हां एक जगह हुज़ूर की इसार की ओर इशारा किया है, फरमाया ''रसूले पाक पर तुम्हारी परेशानी भारी गुज़रती है, शाक गुज़रती है यानि वह तुम्हारी परेशानी के मारे अपनी परेशानी को भूल जाते यही इसार है (तौबा : 28)

अख़्लाक़ी ताक़त का बड़ा अंसुर कुर्बानी है। यह इसार ही साहबे इसार के रहमोकरम की अमली शहादत है। रहम के ज़बानी दावे आसान हैं, अमली तौर पर रहमो मुहब्बत का सबूत ये है कि इंसान अपनी ज़रूरत पर दूसरे की ज़रूरत को ऊपर रखे, ख़ुद भूखा रहकर दूसरे को खाना खिलाए, अपनी ज़रूरतों को मारे, अपनी ख़्वाहिशात को मारे और दूसरे ज़रूरतमों, बीमारों, परेशान हालों के काम आए। रसूले पाक सल्लल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी ईसार की बेमिसाल नमूना थी, कुरआन ने हज़राते सहाबा के इसार की तारीफ की है।

रसूले पाक सल्लल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अंदर जो अख़्लाक़ी कुव्वत थी वह बड़ा मोजज़ा थी, आप को मूसा अलै॰ की तरह यदेवैजा और असा जैसे ज़ाहिरी मोजज़ात नहीं दिए गए। हज़रत ईसा जैसे मुर्दों को ज़िन्दा करने और मिट्टी के परिंदों को ज़िन्दा परिंदा बनाकर उड़ाने जैसे मोजज़ाते नहीं दिए गए। लेकिन कुरआन जैसा इल्मी मोजेज़ा दिया गया और अमली मोजेज़ा आप के अख़्लाक़े करीमाना वजूद था। इस तरह कुरआन इल्मी और अख़्लाक़े हसना अमली यह दोनों मोजज़े मिलकर एक अज़ीम बेमिसाल मोजज़ा बन गए थे। रसूले पाक सल्लल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सारी ज़िन्दगी गुरबत में गुज़री और यह फक्र व अफलास आप का अख़्तयारी था। ज़िन्दगी के आख़िरी दिनों में ईसार की एक मिसाल यह है:-

रसूले अकरम सल्लल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के घरेलू ख़र्च और बाहर के मेहमानों के ख़र्च का सारा इंतज़ाम हज़रत बिलाल रज़ि॰ के हाथों में रहता था। बिलाल ही आने वाले हदियों, अतीयात, और सदक़ात की रक़मों को अपने पास रखते थे और ज़रूरी ख़र्चे करते थे। इत्तेफाक़ से किसी तरह दो दिरहम हज़रत आएशा के हुज़ूरे पाक के ताक में रखे गए, हुज़ूरे पाक सल्लल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब बुख़ार की शिद्दत से इफ़ाक़ा पाते तो हज़रत सिद्दीक़ा से फरमाते, आएशा! यह दिरहम ताक में रखे हैं, उसे ज़रूरतमंदों तक पहुंचा दो, हज़रत सिद्दिक शायद यह सोचती हों कि यह दु:ख बीमारी के दिन हैं, अगर ज़रूरत पड़ गयी तो किस से मांगती फिरूंगी चिराग़ के लिए तेल तो बराबर की सोकन के हुजरे से मांगा है, इस ख़्याल से सिद्दिका खामोखी अख़्तयार कर गईं, मगर सरकारे दो आलम सल्लल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बेचैनी लगी हुई थी आप बराबर ताक़ीद करते रहे यहां तक कि आएशा रज़ि॰ ने बांदी से कहकर वह दिरहम ख़ैरात कर दिए।

रसूले पाक सल्लल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इसार से उम्मत में इत्तेहाद क़ायम हुआ, आप उम्मत के अमीर व कायद थे, आप ने रहन सहन में और मामलात के फैसलों में सहाबा कराम के मुक़ाबले में इसार अख्तयार किया, रहन सहन और समाजी ज़िन्दगी में आपकी सादगी आपके इसार का नतीजा था और आप इंतज़ामी उमूर के अंदर सहाबा कराम से अल्लाह के हुक्म से मश्वरा करते थे और कभी ऐसा भी होता था कि आप सहाबा कराम की राय के मुक़ाबले में अपनी राय वापस ले लिया करते थे, गज़वए उहद के मौक़े पर मदीना में रहकर मुक़ाबला किया जाए या बाहर मैदान में निकलकर दिफा किया जाए, इस मामले में आपकी राय शहर के अंदर दिफा करने की थी, मगर कुछ नौजवानों ने जब जोशे जिहाद में बाहर निकलकर जिहाद करने की राय दी और उस पर इसरार किया तो आप ने अपनी राय वापस ले ली। यह अलग बात हे कि नौजवानों की राय के नतीजे में मुसलमानों के शुरू जंग में ज़बरदस्त झटका लगा, मगर आप को एक मिसाल कायम करनी थी कि अमीर और इमामे जमाअत में इत्तेहाद कायम करने के लिए, अपनी राय वापस ले ली तो उस से उसके वक़ार में कोई फर्क़ नहीं पड़ता। रसूले अकरम सल्लल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जख़्मी करने वाले दुश्मनों को जिन्होंने रहमते आलम के चेहरे अनवर को ज़ख़्मी किया, दनदाने मुबारक को शहीद किया, आप की मौत का ऐलान किया अबू सूफियान ऐलान करता है कि (मात मुहम्मद) मुहम्मद इंतक़ाल कर गये, हालांकि आप एक खंदक में चले गए थे, ऐसे दुश्मनों से अल्लाह तआला को क्या हमदर्दी थी? आप ने सिर्फ एक जुमला इस्तेअजाब इस्तेमाल किया था और यह फरमाया था : 'यह क़ौम कैसे फलाह पाएगी जिसने अपने नबी को जख़्मी कर दिया हो। बस इतना कहने पर अल्लाह के 'वह्यी' के ज़रिए आप को रोक दिया गया कि कहीं खुले शब्दों में आप की जुबान पर बद्दुआ जारी न हो जाए। आप फौरन होशियार हो गए और बद्दुआ की जगह दुआ देने लगे और फरमाया यह नासमझ भाई है उन्हें हिदायत दे। (*हदीस*)

मशीयते इलाही को उन दुश्मनों से हमदर्दी नहीं थी बल्कि आप के अख़्लाक़ी मोजज़े को कमज़ोर होने से बचाना था और कुदरत का यह मंशा था कि उसने जिस ताक़त को कामयाबी की बशारत दी थी उस कुव्वत को कमज़ोर न होने दें।

रसूले पाक सल्लल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सदक़ात व माले ग़नीमत को मस्जिदे नबवी में एक ओर रखवा दिया करते थे हालांकि सहने मस्जिद में एक ओर अजवाज़े मुतहहरात के नौ कमरे बने हुए थे जिनमें से किसी एक कमरे में आप वह क़ौमी माल रखवा सकते थे लेकिन आप की यह एहतियात थी कि कौमी अमानत का माल सब के सामने रहे। इसलिए यह ज़िम्मेदारी अबू हुरैरह रज़ि॰ की थी कि वह मस्जिदे नबवी के चबूतरे पर सोते थे और उस माल की देखभाल करते थे।

अमानत की हिफाज़ात के काम से भी सरकारे दो आलम ने अपने घर वालों को दूर रखा, एक बार ऐसा हुआ कि शैतान आदमी का रूप बदलकर मस्जिद में आया ओर सदक़ात के माल में से कुछ चुरा कर ले गया। दूसरी रात को अबू हुरैराह चौकन्ना हो गए और दूसरी रात को भी शैतान आया उस मलऊन का मक़सद यह था कि अबू हुरैरह जैसे दुरवेश सिफत सहाबी बदनाम हो जाएं। अबू हुरैरह रज़ि॰ ने दूसरी रात को जब आहट महसूस की खड़े हो गए और शैतान मलऊन को पकड़ लिया, शैतान ने

बाक़ी पेज 11 पर

इक़बाल और मुहब्बते रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

रुश्दो हिदायत, कामरानी व कामयाबी, दुनिया व आख़िरत उन लोगों का मुक़द्दर है जो रसूले खुदा हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ की ज़ाते बाबरकात और उनकी तालीमात से फैज़ान हासिल करें। आंहज़रत के पैग़ाम को समझना, उस पर अमल करना और उसे आम करने की हर मुमकिन कोशिश करना, हर मुसलमान की दीनी ज़िम्मेदारी है, चुनांचे हम देखते हैं कि अहदे रसूल से अब तक हर दौर में इस शमां-ए-हिदायत की रोशनी से दुनिया को मुनव्वर करने की कोशिशें की जाती रहीं हैं और इन्शाअल्लाह यह सिलसिला जारी रहेगा। यह भी एक हक़ीक़त है कि जिन लोगों ने हिदायत के इस सरचश्मे को अपनी तलाश का मक़सद बनाया और अपनी तवानाई इस फैज़ान को आम करने में ख़र्च की वह खुद भी क़दरों मंज़िलत और कामरानियों के आला मक़ाम से सरफराज़ हुए।

अल्लामा इक़बाल हमारे एक ऐसे ऊंचे मुफ़क्किर हैं जो इरशादाते इलाही और तालीमाते नबवी सल्ल॰ से अपनी फिक्र के लिए असास फराहम करते हैं, उनके अफकार व नज़रियात का अध्ययन रहनुमाई करता है कि वह रसूलुल्लाह सल्ल॰ की सीरत और तालीमात से वालहाना अक़ीदत रखने वाले मुफक्किर व फलसफी थे, वह कहते हैं :

हूर कुजा बीनी जहाने रंगो बू
आँ की अज खाकश वरुयद आरज़ू
या ज़े नूरे मुस्तफ़ा उरा वेहअस्त
या हुनूज अंदर तलाशे मुस्तफाअस्त

यानि नबी-ए-करीम सल्ल॰ के मुबारक दौर के बाद आलम ने जो कुछ सीखा है वह हुज़ूर सल्ल॰ से ही सीखा है, या फिर इंसान ठोकरें खा-खाकर चार व नाचार उसी मंज़िल की ओर पेशक़दमी कर रहा है कि जिस मंज़िल पर मुहम्मद सल्ल॰ ने पहुंचाया था।

मश्रिक़ व मग़रिब के मुफक्किरों और दानिशवरों की तंकीदों और इलमुल कलाम की नुक़्ताचीनियों में अपने जहाने मानी के तलाश से मायूस होकर जब इक़बाल इस्लामी तालीमाम के संजीदा और गहरे मुतालअे की ओर लौटे तो उन्हें मालूम हुआ कि इन तालीमात का अमीन रसूले करम सल्ल॰ वह ज़ेहने बरगुज़ीदा है जिस में कजी का शायबा नहीं। यह ज़ात बलंद व बाला कश्फ व इलहाम का ऐसा मसदर है जिसकी ज़ेहनी व फिकरी सलाहियत मक़ामे ऊरुज तक पहुंची हुई है और तवाज़ुन इस दर्जा क़ायम है कि इल्हामी वारदात को बग़ैर किसी तसर्रुफ के इस तरह पेश किया जाता है कि न कोई गोशा बयान करने से रह जाता है और न कोई पहलू ऐसा शामिल हो सकता है जो इस वाक़ेआ का हिस्सा न था। मुहम्मद सल्ल॰ की सीरत व किरदार में सोज-ो-साज़, खेरद व नज़र, वसारतो, वसीरत, फकीरी व शाही, अमन व इंक़लाब की सिफात घुल मिलकर इस तरह एक हो गयी थीं कि फिक्र व अमल का ऐसा मुकम्मल इज्तेमा किसी आंख ने कभी न देखा था और न कभी किसी कान ने सुना था।

जब इक़बाल की बेक़रार फिक्र को क़रार आया तो फलसफे की मुजतरेबाना तलाश के बजाए इत्मीनान की दौलत नसीब हुई तो इक़बाल ने रसूले पाक सल्ल॰ की सीरत सरशार होकर अपनी तलाश की नई सिम्तों को शेअर के कालिब में इस तरह ढाला और जवाबे शिकवा में ख़ुदा की जुबान से यह कहा:

मिसले बू क़ैद है गुंचे में परीशान हो जा
रख़्त वरदोशे हवाए चमनिस्तान हो जा
है तनिक माया तो ज़र्रे से बयाबां हो जा
नग़मे मौज से हंगामो तूफान हो जा
कुव्वते इश्क़ से हर पस्त को बाला कर दे
दहर में इस्मे मुहम्मद से उजाला कर दे
हो ना यह फूल तो बुलबुल का तरन्नुम भी न हो
चमने दहर में कलियों का तबस्सुम भी न हो
यह न साक़ी हो तो फिर यह भी न हो खुम भी न हो
बज़्मे तौहीद भी दुनिया में न हो तुम भी न हो
ख़ेमा अफलाक का इस्तादह इसी नाम से है
नब्ज़े हस्ती तपिश अमादा इसी नाम से है।

रसूल मक़बूल सल्ल॰ खुदा की ओर से जो नज़रिया या दावत लेकर आए उसकी बुनियाद दरहक़ीक़त तौहीद है और सीरते रसूल सल्ल॰ का जायज़ा हमारी रहनुमाई इस तरफ करता है कि तौहीद के ज़िम्न में तीन चीज़ें बहुत ही अहमियत की हामिल हैं। सबसे पहली चीज़ इंसानी हाकमियत की मुकम्मल नफी है यानि अल्लाह की हाकमियते मुतलका़ का मुकम्मल इस्बात। अल्लाह के अलावा कोई हाकिम नहीं, न कोई व्यक्ति न कोई ख़ानदान, न कोई क़ौम और न तमाम न-व-ए इंसानी। यह एक ऐसा इंक़लाबी नज़रिआ है जिस तक इंसान का अपना ज़ेहन पहुंच ही नहीं सकता, उसकी जानकारी केवल वह्यी-ए-इलाही के ज़रिए ही हासिल होना मुमकिन है। इसलिए रसूले पाक सल्ल॰ ने इस हक़ को पूरे तौर पर अदा किया ओर हकीमुल उम्मत अल्लामा इक़बाल ने इसी पैग़ाम को शेअर की सूरत में दी:

सरवरी जेबा फक़त उस ज़ाते बेहमता को,
हुक्मरां है इक वही बाक़ी बुता ने आजरी

नज़रिए तौहीद पर यक़ीन रखने वाले के लिए इस अक़ीदे का एक वदीही नतीजा जो सामने आएगा वह इंसान की मिल्कियत की पूरी नफी जिस तरह कोई हाकिम मुतलक नहीं, वैसे ही कोई मालिक मुतलक नहीं। हाकिमे हक़ीक़ी भी अल्लाह ओर मालिके हक़ीकी भी अल्लाह। अल्लाह तआला वही के ज़रिए नबीये बरहक को यह ख़बर दे दी कि 'आसमनों और ज़मीनों की तमाम मीरास अल्लाह ही के लिए है (सूरह आले इमरान) 'और आसमानों व ज़मीनों के तमाम ख़ज़ाने अल्लाह ही के लिए है' (सूरह अल मुनाफिकून) कुरआन हकीम के इस साफ और वाज़ेह ऐलान का एतराफ करते हुए इक़बाल ने उसे यूं बयान किया :

इस से बढ़कर और क्या फिक्र-ओ-अमल इंक़बाल,
पादशाहों की नहीं अल्लाह की है यह ज़मीन

मश्रिक़ व मग़रिब के मुफक्किरों और दानिशवरों की तंकीदों जब इक़बाल इस्लामी तालीमाम के संजीदा और गहरे मुतालअे की ओर लौटे तो उन्हें मालूम हुआ कि इन तालीमात का अमीन रसूले करम सल्ल॰ वह ज़ेहने बरगुज़ीदा है जिस में कजी का शायबा नहीं। यह ज़ात बलंद व बाला कश्फ व इलहाम का ऐसा मसदर है जिसकी ज़ेहनी व फिकरी सलाहियत मक़ामे ऊरुज तक पहुंची हुई है और तवाज़ुन इस दर्जा क़ायम है कि इल्हामी वारदात को बग़ैर किसी तसर्रुफ के इस तरह पेश किया जाता है कि न कोई गोशा बयान करने से रह जाता है और न कोई पहलू ऐसा शामिल हो सकता है जो इस वाक़ेआ का हिस्सा न था।

हक़ीक़त यह है कि इंसान के इस दुनिया में अल्लाह तआला के ख़लीफ़ा और नायब की हैसियत से ज़िन्दगी गुज़ारनी है, वह यहां मालिक नहीं अमीन बनाकर भेजा गया है। मिल्कियत अमानत के इस फर्क को इक़बाल ने यूं बयान किया है :

बंदए मोमिन, हक्के इलाही अस्त
ग़ैर हक़ हर शै की बीनी हालिक अस्त

अक़ीदये तौहीद का तीसरा पहलू यह कि दुनिया के तमाम इंसान बराबर है, कोई ऊंचा नहीं कोई नीचा नहीं, कोई आला नहीं कोई अदना नहीं, रंग व नस्ल की बुनियाद पर इफ्तखार इंसान के अपने ज़ेहन के तराशे हुए फलसफे हैं। अल्लाह तआला ने मुआशरती सतह पर तौहीद के इस इंक़लाबी तसव्वुर को सूरह निशा की पहली आयत में फरमाया ''ऐ नौअे इंसानी! तक़वा अख़्तियार करो अपने उस मालिक और परवरदिगार का जिस ने तुम्हें एक जान से पैदा किया'' और रसूले करीम सल्ल॰ ने भी इंसानों के दरम्यान तफरीक़ की हर जंज़ीर को तोड़ते हुए हज्जतुल विदाअ के मौक़े पर साफ अल्फाज़ में यह ऐलान कर दिया कि ''जान लो कि न किसी गोरे को किसी काले पर कोई फज़ीलत है और न ही किसी काले को किसी गोरे पर किसी अजमी को किसी अरबी पर, न किसी गोरे को किसी काले पर कोई फज़ीलत है फज़ीलत की बुनियाद केवल तक़वा है।

तौहीद के इस तीसरे अहम तरीन तक़ाज़े की अहमियत और एफादियत का अल्लामा इक़बाल को इस क़दर यकीन था कि अहले तौहीद को पूरी उमर मुत्तहिद होने का पयाम देते रहे कभी अलग अलग होने के नुकसान को खुद की ज़बानी यूं बयान किया :

यूँ तो सैय्यद भी हो मिर्ज़ा भी अफग़ान भी हो,
तुम सभी कुछ हो बताओ तो मुसलमान भी हो
एक हों मुस्लिम हरम की पसबानी के लिए,
नील के साहिल से लेकर ताब ख़ाके काशगर

हक़ीक़त यह है कि रसूले खुदा सल्ल॰ की ज़ाते गरामी इस क़दर पाकीज़ा और तकदुदस की हामिल है कि आप की सिफात का बयान सीरत की मजालिस और नातिया कलाम में होता रहा है और आप सल्ल॰ के लिए अक़ीदत व एहतराम का इज़हार किया जाता रहा है लेकिन बहुत कम शेअरा ऐसे हैं जिनके नातिया कलाम में शूफतगी का इज़हार इतना वाज़ेह और मुहब्बत का इज़हार इतना लतीफ है जितना इक़बाल के कलाम में है, शोअरा के दीवान पढ़ लीजए, नातिया कलामों का अध्ययन कर लीजिए कहीं-कहीं कोई शेर कुंदन की तरह दमकता और गौहरे नायाब की तरह चमकता नज़र आएगा, बाकी सब अक़ीदत का इज़हार होगा। ऐसे अशआर जिनमें सच्चाई का एतराफ और सुपुर्दगी की कैफियत बाकी शोअरा के कलाम में कहीं-कहीं दिखेगा। इक़बाल के यहां जिस शेफतगी का इज़हार है उसका सिर्फ एक अक्स मुलाहिज़ा हो :

वह दानाए सुबुल ख़त्मे रुसुल मौलाएकुल जिसने,
गुबारे राह को बख़्शा फरोगे वादिए सीना
निगाहे इश्को मस्ती में वही अव्वल वही आख़िर,
वही कुर्आं, वही फुर्कां, वही यासीन, वही ताहा

इश्को मस्ती की यह शदीद लय जो इक़बाल के कलाम में दिखती है, हक़ीक़त यह है कि उसका सरचश्मा वह मुहब्बत है जो किसी-किसी को नसीब होती है। नातिया कलाम में

बाक़ी पेज 08 पर

ख़ास ख़बरें

चीन की गुस्ताखी : ताइवान की रक्षा के लिए सैन्याभ्यास ज़रूरी

बीजिंग : पड़ोसी देशों में तनाव बढ़ाने और उसे सही ठहराने की गुस्ताखी चीन अब भी कर रहा है। चीन के एक अधिकारी को ताइवान के पास सैन्य अभ्यास और घुसपैठ की कार्रवाई को देश और क्षेत्र की रक्षा के नाम पर ज़रूरी ठहराया है। ताइवान का मानना है कि चीन के ये क़दम सैन्य ताक़त के दम पर द्विपीय राष्ट्र को अपने कब्ज़े में लेने की मंशा दर्शाते हैं। चीनी कैबिनेट में ताइवान मामलों के कार्यालय के प्रवक्ता मा शिओगुआंग ने बताया कि युद्धाभ्यासों का उद्देश्य मूल रूप से चीन के हितों की रक्षा के साथ-साथ ताइवान जलमडरूमध्य के दोनों ओर के लोगों के अहम हितों की हिफाज़त करना है।

ब्राजीली राष्ट्रपति पर पर्यावरण को अनुसार पहुंचाने का केस

द हैग : ब्राजील के राष्ट्रपति जायर बोल्सोनारो के विरुद्ध अंतर्राष्ट्रीय अपराध न्यायालय (आईसीसी) में प्रकृति से खिलवाड़ संबंधी अपराध का केस दर्ज कराया गया है। ऑस्ट्रिया में जलवायु संकट के लिए काम करने वाली संस्था 'ऑलराइज' ने अपील की है कि आधिकारिक तौर पर जांच की जाए कि बोल्सोनारो की नीतियां मानवता के ख़िलाफ़ हैं या नहीं।

पंजाब, बंगाल में बार्डर के 50 किमी दायरे में बिना वारंट अरेस्ट

केन्द्रीय गृह मंत्रालय ने सीमा सुरक्षा बल यानि बीएसएफ का अधिकार क्षेत्र बढ़ाते हुए अब अधिकारियों को तलाशी गिरफ्तारी और ज़ब्ती की शक्तियां भी दे दी गई हैं। ये अधिकार बीएसएफ को भारत-पाक और भारत बांग्लादेश की अंतर्राष्ट्रीय के 50 किमी दायरे में दिया गया है। यानि अब मैजिस्ट्रेट के आदेश और वारंट के बिना भी बीएसएफ इस अधिकार क्षेत्र के अंदर गिरफ्तारी और तलाशी कर सकती है।

अफग़ानिस्तान से जुड़ी बातचीत पर भारत सतर्क

अफग़ानिस्तान को लेकर भारत न सिर्फ सतर्क है बल्कि विश्व समुदाय को स्पष्ट संदेश दे रहा है कि वहां से जुड़ा कोई फैसला अंतर्राष्ट्रीय समुदाय करता है तो भारत को लूप में रखना ज़रूरी है। अफग़ानिस्तान के मुद्दे पर जी-20 की विशेष मीटिंग में प्रधानमंत्री मोदी ने इस बात पर स्पष्टता से सभी देशों को संदेश दिया। सूत्रों के अनुसार पीएम मोदी ने ग्लोबल समुदाय से कहा कि अफग़ानिसतान मसले से भारत का सरोकार सीधा जुड़ा है। ऐसे में कोई भी बातचीत होती है तो भारत उसका अपने हित के संदर्भ में मूल्यांकन करने के बाद ही उससे जुड़ेगा।

इक़बाल और मुहब्बते रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

शेष : पृष्ठ 7

आमतौर पर अक़ीदत और एहतराम का जो इज़हार किया जाता है कलामे इक़बाल उससे इन माएनों में हद दर्जा ऊंजा हैं कि इक़बाल के यहां तालीमाते रसूल का बयान बिल्कुल सराहत के साथ हुआ हैं। दरहक़ीक़त नबी-ए-करीम सल्ल॰ की सच्ची अक़ीदत और मुहब्बत का तक़ाज़ा है कि तब्लीग़ के इस वारेगेरां का हक़ अदा किया जाए जो हज्जतुल विदाअ के मौक़े पर आप सल्ल॰ ने आने वाली नस्लों को मुंतक़िल किया था। जज़ीरा नुमा अरब में इस्लाम का परचम बुलंद करने, इलाही तालीमात पर आधारित एक मुकम्मल निज़ामे ज़िन्दगी अमलन नाफिज़ करने और दीने मुबीन की तकमील के बाद आप सल्ल॰ ने इस जहां से रुख़सत ली और फिर रहती दुनिया तक पहुंचाने और तमाम कोर-ए-अर्ज़ पर तमाम, कमाल, निज़ामे हक़ को क़ायम करने की ज़िम्मेदारी उम्मतियों के हिस्से में आयी। इक़बाल को इस ज़िम्मेदारी का पूरा एहसास था। उन्हें मालूम था कि नूरे तौहीद का इतमाम अभी बाकी है इसलिए उन्होंने अपने कलाम को कलामे इलाही की तालीमात को तब्लीग़ का ज़रिया बनाया।

रसूले ख़ुदा की बुनियादी तालीम तौहीद के जिमन में जित तीन पहलुओं का ज़िक्र ऊपर किया गया और उनके हवाले से कलामे इक़बाल से जो मिसालें पेश की गयीं। वह इस बात की गम्माज हैं भले ही नातियां अशआर का रिवायती लबो-लेहज़ा कलाम इक़बाल में मौजूद न हो लेकिन उनका कलाम तालीमाते रसूल सल्ल॰ का पुरअसर बयान है, जो मुहब्बते रसूल सल्ल॰ का हक़ीक़ी तक़ाज़ा है। इस बारे में इक़बाल का दावा मुलाहिज़ा हो जो उन्होंने मसनवी रुमूज़ बेखुर्दा में आंहज़रत को मुखातिब करके किया है और जिसका हासिल यह है कि ''मैंने मिल्लते इस्लामिया को जो मुर्दा हो चुकी थी, आबे हैवान का पता बताया है और कुरआनी असरार में से एक राज से बाख़बर कर दिया है। आप सल्ल॰ दिलों के हाल से आगाह हैं मेरे कलाम और उसकी हक़ीक़त से आगाह हैं। अगर मेरे कलाम में कुरआन में फिक्र के सिवा कोई फिक्र पोशीदा हो तो क़यामत के दिन मुझे ज़लील व ख़ार करना और अपनी पावोसी से वंचित कर देना।'

मुर्दा बूद अज आबे हयवान गुफतमश
सिर्रे अज असरारेकुर्आं गुफत मश
गर दिलम आइना-ए-वे जौहर अस्त
दर बहरे फहमे गैरे कुर्आं मुजमर अस्त
रोज़े महशर ख्वार व रुसवा कुन मरा
बेनसीब अज वोसए पाकुन मरा

अल गरज़ यह कि इक़बाल के ख़्याल में मिल्लते इस्लामिया को हलाक कर देने वाली तमाम बीमारियों का इलाज केवल यह है कि मुसलमान अपनी अक़ीदत को रसूले पाक सल्ल॰ से मज़बूत करें और यह अक़ीदत इस दर्जा शदीद हो कि मक़ामे इश्क़ तक रहनुमाई करे। मुसलमान के लिए लाज़िमी है कि रसूलुल्लाह सल्ल॰ के क़ौल से ही इस्तिदलाल करे। उन्हीं के अमल से इस्तिशहाद करे और उन्हीं की सीरत को नमूना बनाए, यही किताब व सुन्नत की पैरवी है और यही ''इस्लाम'' है। ❑❑

इर्शादाते रसूल (स.अ.व.)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमाया कि अगर तुमने अपने भाई के हाथ खजूर का बाग़ फरोख़्त कर दिया फिर किसी आसमानी आफ़त की वजह से खजूरें दरख़्तों पर ही तलफ हो गईं तो तुम्हारे लिए ख़रीदार से कोई रक़म लेना जाइज़ नहीं। भला तुम बग़ैर किसी हक़ के अपने भाई का माल कैसे ले सकते हो? हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु ही से रिवायत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने बाग़ों का फल किसी नागहानी आफ़त से ज़्यादा हो जाने की सूरत में उनकी फरोख़्त का मामला रद्द कर देने के लिए फरमाया है।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमाया है कि जब बाग़ों में फल ही न आया हो तो फिर तुम किस बिना पर अपने भाई के माल (यानि बाग़ की क़ीमत) को अपने लिए जाइज़ समझते हो?

हज़रत अबू यसार रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि मैंने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को फरमाते हुए सुना है कि जिस शख़्स ने अपने तंगदस्त मक़रूज़ को कर्ज़ की अदाएगी में मुहलत दी या कर्ज़ का कुछ हिस्सा माफ़ कर दिया तो हक़ तआला उसे अपने सायए रहमत में जगह देगा।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमाया कि एक शख़्स लोगों को क़र्ज़ दिया करता था और अपने बेटे को हिदायत करता था कि अगर तुम अपने कर्ज़दार को तंगदस्त पाओ तो उससे दरगुज़र किया, करो, शायद हक़ तआला हमारी ख़ताओं से दरगुज़र फरमाए। नतीजा यह कि जब वह मौत के बाद अल्लाह से जा मिला तो अल्लाह ने उसके गुनाहों को बख़्श दिया।

हज़रत हुज़ैफा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फरमाया तुम दूसरों की देखा देखी काम करने वाले मत बनो और यह न कहने वाले बनो कि अगर और लोग एहसान करेंगे तो हम भी एहसान करेंगे और अगर दूसरे लोग जुल्म का रवैया अख्तयार करेंगे तो हम भी वैसा ही करेंगे। बल्कि अपने दिलों को इस पर पक्का करो कि अगर और लोग एहसान करें तब भी तुम एहसान करोगे और अगर वो लोग बुरा सुलूक करें तब भी तुम जुल्म और बुराई का रवैया इख़्तियार न करोगे। (बल्कि एहसान ही करोगे) (तिर्मिजी)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह का जो बन्दा बे शौहर वाली और बेसहारा किसी औरत और किसी मिस्कीन और हाजतमंद आदमी के कामों में दौड़धूप करता हो, वह अज्र व सवाब में उस मुजाहिद बन्दे की तरह है जो अल्लाह की राह में दौड़ धूप करता हो। रावी कहते हैं ''और मेरा ख़्याल है कि आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने यह भी फरमाया था कि और उस शब बेदार की तरह है जो रात भर नमाज़ पढ़ता हो और थकता न हो और उस दाएमी रोज़ेदार की तरह हो जो हमेशा रोज़ा रखता हो, कभी बग़ैर रोज़े के रहता ही न हो।

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि मेरी उम्मत में से सत्तर हज़ार बग़ैर हिसाब के जन्नत में जाएंगे। यह वह अल्लाह के बन्दे होंगे जो मंतर नहीं कराते और शगूने बद नहीं लेते और न फाले बद के क़ायल हैं और अपने परवरदिगार पर तवक्कुल करते हैं। (बुख़ारी व मुस्लिम)

नूरे क़ुरआन

(सूरा अल क़द्र नं॰ 97)

अनुवाद और व्याख्या : शैख़ुल हिन्द र.अ.

(सूरा अल क़द्र नं॰ 97)

यह सूरा मक्का में उतरी इसमें पांच आयते हैं।

प्रारंभ करता हूं मैं अल्लाह के नाम से जो असीम कृपालु महादयालु है।

निःसंदेह हमने कुरआन को क़द्र की रात में उतारा है।

अर्थात् कुरआन मजीद लौह महफूज़ (अर्श पर वह रजिस्टर जिस में प्रारंभ से अंत तक होने वाली वस्तुओं का उल्लेख है) से सबसे निचले आसमान पर शब क़दर में उतारा गया और संभवतः इसी रात में सांसारिक आकाश से हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ पर उतरना प्रारंभ हुआ इसके विषय में कुछ वर्णन सूरा नं॰ 44 में आ चुका है वहां देख लिया जाये।

और आपको कुछ मालूम है कि क़द्र की रात क्या है। क़द्र की रात हज़ार महीनों से अच्छी है।

अर्थात् उस रात में नेकी करना ऐसा है जैसे हज़ार महीनों तक नेकी करता रहा, बल्कि इससे भी अधिक।

इस रात में फरिश्ते और रूह अपने रब के आदेश से उतरते हैं।

अर्थात् अल्लाह के आदेश से रुहुल कुदुस (हज़रत जिब्रील) असंख्य फरिश्तों की मंडली के बीच उतरते हैं। इसलिए कि अल्लाह की असीम कृपा और बरकत से ज़मीन वालों को लाभान्वित करें और संभव है रूह से तात्पर्य फरिश्तों के अतिरिक्त कोई और दूसरी सृष्टि हो। कहने का तात्पर्य यह है कि इस कल्याणकारी और मुबारक रात में आंतरिक जीवन और आत्मिक पवित्रता और कल्याण का एक विशेष अवतरण होता है।

प्रत्येक कार्य को लेकर उतरते हैं।

अर्थात् संसार के प्रबंध में जो काम इस साल में करने हैं उनको कार्यान्वित करने के लिए फरिश्ते आते हैं या इस आयत से तात्पर्य केवल अच्छा काम हो अर्थात् हर प्रकार के अच्छे कामों को लेकर आसमान से उतरते हैं।

(वह रात प्रारंभ से अंत तक) सलामती की है।

अर्थात् वह रात अमन-चैन और मन की शान्ति की रात है, उसमें अल्लाह वाले लोग विचित्र शान्ति आनंद और मिठास अपनी उपासना में अनुभव करते हैं। यह प्रभाव होता है अल्लाह की रहमत के उतरने का जो जिब्रील और फरिश्तों के माध्यम से प्रत्यक्ष होती है। कुछ हदीसों में है कि रात जिब्रील और फरिश्ते अल्लाह की उपासना करने वालों को सलाम भेजते हैं अर्थात् उनके लिए कृपा और शान्ति की प्रार्थना करते हैं।

रुकू नं॰ 1

वह रात (उसी गुण और बरकत के साथ) प्रातःकाल के होने तक रहती है।

अर्थात् संध्या (शाम) के समय से प्रातःकाल तक सारी रात यही सिलसिला रहता है, इस प्रकार पूरी रात कल्याणकारी है।

चेतावनी :-कुरआन से ज्ञात होता है कि वह रात रमज़ान शरीफ़ में है और हदीस में बतलाया कि रमज़ान के आख़िरी दस दिनों में विशेषकर उन दस दिनों की टांक रातों में उसको ढूंढना चाहिए। फिर टांक रातों में भी 27वीं रात की अधिक संभावना है बहुत से विद्वानों ने स्पष्ट कहा है कि शब क़दर सदैव के लिए किसी एक रात के लिए तय नहीं, संभव है एक रमज़ान में कोई रात हो, दूसरे में दूसरी।

नआते पाक

वफ़ा आज़मी

सामने होता है मंज़र जब नबी के शहर का
ज़िक्र होता है ज़ुबां पर गुलिस्ताने दहर का

हौजे कौसर से किया सैराब ऐसा दोस्तो
तल्ख़ अब लगता नहीं घूंट कोई ज़हर का

नूरे अहमद का सुना जब नाम ग़ैरों ने तभी
आ गए दीदार करने उस नवाए महर का

हर मुसीबत का किया है सामना हंसते हुए
पर न छोड़ा आप ने दामन कभी भी सब्र का

या इलाही मैं भी पहुं चूँ सरवरे कौनेन तक
खींचता है दिल को कूचा पासवाने शहर का

मआफ कर दीं सब ख़ताएं अहमदे मुख़्तार ने
चाहे वह बदखाह जिसने मारा हो दम सेहर का

मिल गई ताक़त जहां को हुस्न और अख़्लाक़ी की
छट गया बादल वफ़ा दुनिया से ज़ुल्मो क़हर का

प० बंगाल उपचुनाव तृणमूल कांग्रेस की जीत

पश्चिमी बंगाल विधानसभा के तीन उपचुनावों में जिस प्रकार ममता दीदी की तृणमूल कांग्रेस पार्टी की जीत हुई है उससे साबित होता है कि इस राज्य में ममता दीदी का मुक़ाबला करने की ताक़त किसी भी राष्ट्रीय स्तर या क्षेत्रीय स्तर की पार्टी में नहीं है। ये उपचुनाव इस वजह से राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा में थे क्योंकि कोलकाता इलाके की भावनीपुर सीट से स्वयं ममता दी चुनाव लड़ रही थीं। उन्होंने यहां पर भाजपा की प्रत्याशी को लगभग 59 हजार मतों से पराजित किया। इसके अलावा समसेरगंज व जंगीपुर सीटों पर तृणमूल कांग्रेस के प्रत्याशियों ने जिस प्रकार धमाकेदार जीत दर्ज की है वह बताती है कि राज्य में कांग्रेस पार्टी का अस्तित्व दीवी में समा चुका है। जंगीपुर से तो तृणमूल के प्रत्याशी ज़ाकिर हुसैन को 70 प्रतिशत से अधिक मत मिले जबकि दूसरी ओर समरेसगंज से इसके प्रत्याशी ने 52 प्रतिशत से अधिक मत पाये। जंगीपुर तो कांग्रेस पार्टी का गढ़ माना जाता था परंतु यहां से कांग्रेस ने अपना कोई प्रत्याशी उतारा तक नहीं। यहां दूसरे स्थान पर भाजपा का प्रत्याशी रहा। जकि समसेरगंज में कांग्रेस का प्रत्याशी दूसरे नंबर पर रहा। उपचुनावों में जीत से ममता दी की राष्ट्रीय छवि में निखार आना बहुत स्वाभाविक राजनैतिक प्रक्रिया है। परंतु इसे यह सिद्ध नहीं होता कि ममता दी की लोकप्रियता देश के अन्य उत्तरी या दक्षिणी राज्यों में भी बढ़ेगी। ममता दी के लिए भवानीपुर चुनाव जीतना उन्हें अपने पद पर बने रहने के लिए बहुत ज़रूरी था क्योंकि मार्च महीने में राज्य में हुए चुनावों के दौरान वह नंदीग्राम विधानसभा सीट से अपने ही एक कनिष्ठ सहयोगी शुभेन्दु अधिकारी से बहुत कम मतों के अंतर से चुनाव हार गई थीं

इस परिणाम को ममता दी ने न्यायालय में चुनौती दी हुई है परंतु सत्ता की बागडोर संभालने रखने के लिए उन्हें उपचुनाव जीतना आवश्यक था जिसकी वजह से उन्होंने भावनीपुर से जीते हुए अपनी पार्टी के प्रत्याशी से इस्तीफा दिलाया जिससे यहां छह माह की अवधि में चुनाव हो सकें। संविधान के अनुसार कोई भी व्यक्ति चुने ुए सदन का सदस्य न होते हुए भी मुख्यमंत्री बन सकता है मगर छह माह के भीतर उसे इसका सदस्य बनना होता है। ममता दीदी जब नन्दीग्राम से चुनाव हारी तब भी वह मुख्यमंत्री थीं परंतु मार्च में हुए चुनावों में उनकी पार्टी ने धमाले मचाते हुए शानदार सफलता प्राप्त की। 298 सदस्यीय विधानसभा में 213 सीटें जीतीं। उनकी यह जीत पिछले 2016 के चुनावों से भी अधिक प्रभावी थी। इस जीत से उन्होंने भाजपा के इस दावे को नकार दिया कि प. बंगाल में यह पार्टी उत्तर-पूर्वी राज्यों की तरह अपना झंडा फहरा सकती है। मगर ममता दीदी को अपनी हार का ग़म भीतर से कचोट रहा था क्योंकि उनकी फौज तो चुनावों में जीत गई थी मगर जनरल की टोपी उतर गई थी। इसलिए भवानीपुर से उनकी विजय की गूंज पुरानी हार का बदला लेने के लिए बहुत ज़रूरी थी और इसे ममता दी ने पूरी शान के साथ लिया। उसके विरुद्ध प्रत्याशी ढूंढने में भाजपा को काफी जद्दोजहद करनी पड़ी और अंत में एक तेज़ तर्रार वकील प्रियंका टिब्बरवाल को मैदान में उतारा गया। ममता दीदी के क़द को देखते हुए प्रियंका ने चुनाव बखूबी लड़ा और 24 हजार से कुछ अधिम मत प्राप्त भी किये परंतु प्रारंभ से ही यह लड़ाई एकतरफा मानी जा रही थी क्योंकि ममता दीदी पहले भी दो बार 2011 और 2016 में भावनीपुर से ही चुनाव जीत चुकी थीं। वैसे ममता जब मार्च में चुनाव हारी थीं तो कोई अजूबा नहीं हुआ था क्योंकि उनसे पहले भी 1967 में राज्य के मुख्यमंत्री के रूप स्व. पी.सी.सेन आरामबाम विधानसभा सीट से चुनाव हार गए थे और वह भी अपने एक सहायक रहे स्व. अजय मुखर्जी से बहुत कम मतों के अंतर से हारे थे। स्व. सेन को आरामबाग़ का गांधी कहा जाता था। बाद में वह भी उपचुनाव में विजयी रहे थे परंतु 1967 में स्व. सेन की पार्टी कांग्रेस भी चुनाव हार गई थी। मगर दीदी की बात पूरी तरह अलग है। उन्होंने अपने राज्य में जो राजनीतिक विमर्श खड़ा किया है उसके समक्ष पूर्व सत्ताधारी वामपंथी पार्टियां और वर्तमान में चुनौती देने वाली भाजपा दोनों ही कोई सशक्त व लोकप्रिय वैकल्पिक विमर्श खड़ा नहीं कर सकी।

ममता दीदी जब नन्दीग्राम से चुनाव हारी तब भी वह मुख्यमंत्री थीं परंतु मार्च में हुए चुनावों में उनकी पार्टी ने धमाले मचाते हुए शानदार सफलता प्राप्त की। 298 सदस्यीय विधानसभा में 213 सीटें जीतीं। उनकी यह जीत पिछले 2016 के चुनावों से भी अधिक प्रभावी थी। इस जीत से उन्होंने भाजपा के इस दावे को नकार दिया।

यदि ज़मीन हक़ीक़त को देखा जाये तो वामपंथी विकल्प मृतप्राय हो चुका है जबकि भाजपा का विकल्प

लखीमपुर खीरी प्रकरण विपक्ष बनाम सत्तारुढ़ बनता दिख रहा

उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी में पिछले जिस तरह चार किसानों की वाहनों के नीचे लाकर हत्या की गई है उसकी कोई दूसरी मिसाल स्वतंत्र भारत में नहीं मिलती है। ये वाहन केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री अजय मिश्रा के मोटर काफिले का हिस्सा थे। कहा जा रहा है कि इस काफिले में कुल तीन वाहन थे जिनमें से एक में अजय मिश्रा स्वयं सवार थे जिसे उनका पुत्र आशीष मिश्रा चला रहा था। यह काफिला मिश्रा के पुश्तैनी गांव बनवीरपुर से लौट रहा था जहां हुए वार्षिक समारोह में भाग लेने राज्य के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य आने वाले थे और किसान कृषि कानूनों को लेकर उनके विरोध में एक प्रमुख रास्ते पर एकत्र हुए थे और काले झंडे दिखाना चाहते थे। गांव में समारोह संपन्न हो जाने के बाद वहां से लौटते अजय मिश्रा के मोटर काफिले को किसानों द्वारा रुकवाने के प्रयासों के दौरान यह बर्बर व दर्दनाक घटना घटी जिसमें चार लोगों की मृत्यु हो गई।

प्रश्न यह है कि यदि यह मामला स्वयं गृह राज्य मंत्री से संबंधित है तो उन्हें स्वयं ही सबसे पहले कानून व्यवस्था की स्थापना करने हेतु राज्य की योगी सरकार से संपर्क साध कर दोषियों के ख़िलाफ कड़ी कार्रवाई करने का क़दम उठाना चाहिए था मगर उल्टे अजय मिश्रा सफाई दे रहे थे कि घटना स्थल पर न तो वह मौजूद थे और न उनका बेटा। योगी सरकार और किसानों के मध्य समझौता हो गया है और मामले की जांच जज से करवाई जाने का आश्वासन दिया गया है।

लखीमपुर खीरी जाने से विपक्ष के नेताओं को जिस तरह पुलिस ने रोका उससे यह स्पष्ट भी हो गया कि प्रशासन सच को बाहर नहीं आने देना चाहता। कांग्रेस की नेता श्रीमति सोनिया गांधी को लखीमपुर जाने से रोकने के लिए जिस तरह पुलिस अधिकारियों ने उनसे व्यवहार किया और बिना किसी लिखित आदेश के उन्हें गिरफ्तार करके सीतापुर के एक सरकारी गेस्ट हाऊस में रखा गया, वह पूरी तरह कानून के शासन की धज्जियां उड़ाता है। लोकतंत्र में जितनी ज़िम्मेदारी सत्ता पक्ष की होती है उतनी ही विपक्ष की भी होती है। दोनों की जवाबदेही जनता के प्रति होती है।

कोई भी राजनैतिक दल सत्ता में आने के बादर विपक्षी पार्टियों को दुश्मन या शांति भंग करने वाली शक्तियां नहीं मान सकता है क्योंकि जनता के दुख-दर्द में सहभागी बनने का उनका मूल अधिकार होता है। हमारी संवैधानिक बहुदलीय प्रशासन प्रणाली इस बात की गारंटी देती है कि प्रत्येक वैध व मान्य राजनीतिक दल की सरकार की हर कार्रवाई की जांच परख करने का वैधानिक अधिकार है। अत: श्रीमति प्रियंका गांधी को लखीमपुर जाने से रोकने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार को वह कारण बताना चाहिए था जो क़ानून के नज़रिये से उनकी यात्रा को अवांछित बताता। मगर ऐसा कुछ भी नहीं हुआ और कुछ पुलिस अधिकारियों ने उनके व उनके साथियों के साथ अभद्र व्यवहार करते हुए उन्हें हिरासत में डाल दिया। याद रखने की ज़रूरत हे कि प्रियंका उन इंदिरा की पोती हैं जिन्हें 1978 में तत्कालीन जनता पार्टी सरकार ने सड़क से उठा कर गिरफ्तार करने की हिमाकत कर डाली थी मगर उसके बाद पूरे देश की राजनीति का माहौल पलट गया था।

यह मामला उत्तर प्रदेश का है अत: बदलती फिज़ां का अंदाज़ा लगाया जा सकता है। मगर यह कैसे स्वीकार किया जा सकता है कि छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल और पंजाब के मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी के हवाई जहाजों को भी लखनऊ में उतरने की इजाज़त मिलने में सरकार के हाथ पैर फुलने लगे। ये दोनों नेता भी किसानों के दुख में शरीक होना चाहते थे। इसी प्रकार सपा के अखिलेश यादव को लखनऊ में ही घर के बाहर रोक दिया गया और लोकदल के जयंत चौधरी को गढ़ मुक्तेश्वर में ही पकड़ लिया गया। इन सभी नेताओं के लखीमपुर खीरी जाने से केवल किसानों को भी सान्त्वना मिलती और उन्हें एहसास होता कि सच को सामने लाने के लिए उनके साथ पूरा देश खड़ा हुआ है।

दूसरी ओर किसान यूनियन के राकेश टिकैत ने लखीमपुर जाकर किसानों व सरकार के बीच समझौता कराया जिसके अनुसार प्रत्येक मृतक किसान के परिवार को 45 लाख की धनराशि का मुआज़ा दिया जाएगा। जनता द्वारा चुनी हुई सरकार में किसी घटना के लिए जिस किसी भी चुने हुए प्रतिनिधि की ज़िम्मेदारी हो उसका मुचलका कटना इसलिए ज़रूरी होता है जिससे आम जनता में विश्वास कायम रहे कि यह उन्हीं की सरकार है। यह बेवजह नहीं होता कि इस प्रणाली में प्रत्येक नागरिक की जान-ओ-माल की गारंटी सरकार देती है।

1980 के दशक में राजस्थान के 'डीग' के पूर्व महाराजा मानसिंह की भरतपुर के हवाई पैड पर पुलिस की गोली से हत्या हो जाने पर तत्कालीन मुख्यमंत्री शिवचरण माथुर से तब के प्रधानमंत्री स्व. राजीव गांधी ने इस्तीफा ले लिया था। लखीमपुर खीरी में तो कुल आठ निरीह लोगों क जान गई है। ❑❑

भारत टैस्ट, एकदिवसीय और टी-20 के लिए अलग-अलग कप्तान नियुक्त करेगा

क्या सफल होगा विभिन्न प्रारूपों में कप्तानों का प्रयोग

भारतीय टीम के कप्तान विराट कोहली ने टी-20 टीम की कप्तानी छोड़ने का ऐलान किया है। उन्होंने एक टवीट के माध्यम से जानकारी सांझा की। वे टी-20 विश्व कप के बाद इस पद से मुकत होकर पूरी तरह से बल्लेबाज़ी पर ध्यान लगाना चाहते हैं। हालांकि इस फैसले के कयास लंबे समय से लगाए जा रहे थे। मई में ही पूर्व चयनकर्ता किरण मोरे ने संकेत दिए थे कि इंग्लैंड दौरे के बाद कोहली इस ज़िम्मेदारी को रोहित शर्मा को सौंप सकते हैं विश्व में पहले से अलग अलग प्रारूपों के लिए अलग-अलग कप्तान का चलन है और इसमें कई देश काफी सफल भी रहे हैं। विराट के इस फैसले से प्रशंसक भले ही चकित हों लेकिन क्रिकेट के जानकारों का मानना है कि वे काफी समय से इसका संकेत दे रहे थे। उन्होंने टवीटर पर एक पत्र साझा कर अपने इस फैसले से अवगत कराया। उनके भविष्य की योजनाएं क्या हैं, इसे भी इस पत्र के माध्यम से बताया गया। क्रिकेट के जानकारों की मानें तो पत्र में लिखी बातों के अलावा भी कई वजहों ने इस फैसले में अहम भूमिका निभाई है। वैसे कोहली ने पत्र में काम के दबाव को अपने फैसले की मुख्य वजह बताया है। साथ ही अपनी बल्लेबाज़ी को और निखान देना चाहते हैं और इसके लिए उन्हें कप्तानी के दबाव को किनारे रखना होगा।

जैसा कि कोहली ने बताया, 'उसके मुताबिक वे काम के दबाव को कम करना चाहते हैं। उन्होंने सिर्फ टी-20 कप्तानी छोड़ी है।' कोहली जब से तीनों फार्मेट के कप्तान बने हैं तब से अब तक टी इण्डिया को 67 टी-20 मैच खेले हैं। इनमें से सिर्फ 45 में ही कोहली टीम का हिस्सा रहे हैं। यानि, 33 प्रतिशत मैचों में कोहली को आराम दिया गया। वहीं जो बात इस फैसले में पर्दे के पीछे से काम कर रही थी उसमें आइसीसी जैसे बड़े मुक़ाबलों में उनकी कप्तानी में कोई ख़िताब नहीं जीतने का दबाव अहम है। दूसरी ओर आइपीएल में भी कुछ अच्छा नहीं हो रहा। इस पद के प्रबल दावेदार रोहित इस मामले में काफी आगे निकले। मैच जीतने की बात हो या आइपीएल ख़िताब, सभी में उनका पलड़ा भारी है।

रोहित के बेहतर प्रदर्शन और कोहली के ख़राब खेल के कारण बीसीसीआइ के भीतर भी आवाज़ उठने लगी थी। कई दिग्गजों ने कोहली के कार्यभार पर विचार करने के लिए कहा था। साथ ही मुंबई को पांचवीं बार चैम्पियन बनाने के रोहित के कारनामे ने उन्हें इस पद के लिए प्रबल दावेदार बना दिया है। दो वर्ष से कोहली का बल्लेबाज़ के रूप में प्रदर्शन ख़राब रहा है। उनके ऊपर कप्तानी का दबाव दिख रहा है। 2016 से 2018 के बीच कोहली कैरियर के सबसे बेहतरीन फार्म में थे। इस दौरान ज़्यादातर उन्होंने सिर्फ टैस्ट मैचों की कप्तानी की थी। वनडे और टी-20 में वो धोनी की कप्तानी में खेल रहे थे।

देश में पहली बार अलग-अलग प्रारूप में अलग कप्तान बनाने का चलन 2007 में शुरू हुआ। टी-20 विश्व कप के दौरान यह प्रयोग किया गया। महेंद्र सिंह धोनी कप्तान बनाए गए और सफल रहे। भारत ने टी-20 विश्व कप ख़िताब पर कब्ज़ा जमाया। धोनी के इस शानदार प्रदर्शन के बाद उन्हें आस्ट्रेलिया के ख़िलाफ़ होने वाली एकदिवसीय श्रृंखला के लिए कप्तान बना दिया गया। इस क़दम के बाद कयास का दौर शुरू हुआ। चर्चा होने लगी कि धोनी को अब टैस्ट मैच में कप्तानी भी सौंपी जा सकती है। हालांकि ऐसा नहीं हुआ। वर्तमान कप्तान राहुल द्रविड़ की जगह अनिल कुंबले को टेस्ट टीम कप्तान बना दिया गया। कुंबले ने दस टेस्ट मैचों में टीम की कमान संभाली। ये पहला मौका था जब एकदिवसीय और टी-20 का कप्तान अलग और टैस्ट का कप्तान अलग था। हालांकि, इस दौर में कुंबले ने सिर्फ टैस्ट खेलते थे। टैस्ट में वे उपकप्तान की भूमिका में थे। कुंबले के संन्यास के बाद नवंबर 2008 में धोनी तीनों प्रारूपों में टीम इंडिया के कप्तान बन गए।

सात साल बाद एक बार फिर देश में दो कप्तान का दौर आया। वर्ष 2014 दिसंबर के माह की बात है। भारतीय टीम आस्ट्रेलिया दोरे पर थी। धोनी ने बीच श्रृंखला में कप्तानी छोड़ने के साथ ही टैस्ट से संन्यास का ऐलान कर दिया। कोहली टैस्ट टीम के कप्तान बनाए गए। वहीं, वनडे और टी-20 की कप्तानी ध ोनी करते रहे। जनवरी 2017 में ध ोनी ने वनडे और टी-20 की भी कप्तानी छोड़ दी हालांकि, वे इन दोनों प्रारूप में खेले रहे। इसके बाद से विराट तीनों प्रारूप में टीम के कप्तान हैं। सात वर्ष बाद एक बार फिर भारतीय टीम को अलग अलग प्रारूप में अलग कप्तान मिलेगा। इस बार टैस्ट ओर वनडे में एक कप्तान होगा तो टी-20 में अलग। टीम के उपकप्तान रोहित शर्मा इस रेस में सबसे आगे हैं।

विश्व के कई देश कर रहे हैं इस तरह का प्रयोग

आइसीसी के 12 स्थायी सदस्य हैं, यानि, वे देश जो टेस्ट, टी-20, वनडे तीनों प्रारूप में खेलते हैं। इनमें से सात देशों में इस वक्त अलग अलग प्रारूप में अलग कप्तान हैं। जिन तीन देशों में तीनों प्रारूपों के एक ही कप्तान हैं उनमें भारत, न्यूजीलैंड और पाकिस्तान शामिल हैं। वहीं, आयरलैंड और जिंब्बाब्वे के लिए आख़िरी बार टैस्ट में कप्तानी करने वाले विलियम पोर्टरफील्ड और बैंडन टेलर क्रिकेट के संन्यास ले चुके हैं।

एकदिवसीय विश्व कप चैम्पियन इंग्लैंड और टी-20 वेस्ट इंडिज में अलग अलग कप्तानों का चलन है। 2018 में गेंद से छेड़छाड़ के बाद आस्ट्रेलिया में भी वनडे टी-20 की कप्तानी एरॉन फिंच कर रहे हैं तो टैस्ट में टिम पेन टीम के कप्तान है। साउथ अफ्रीका में टैस्ट और वनडे, टी-20 के कप्तान अलग हैं। पाकिस्तान में इस वक़्त तीनों प्रारूपों में बाबर आज़म कप्तान हैं, लेकिन छह माह पहले तक वहां भी अलग-अलग प्रारूपों के अलग अलग कप्तान थे। बांग्लादेश में तो इस वक्त तीनों प्रारूपों में तीन अलग कप्तान हैं। ❑❑

मोटापे से राहत के हैं अनेक उपाय

बीमारी के रूप में मोटापे की समस्या भारत में महामारी की तरह व्याप्त हो गई है। मेडिकल जर्नल लैंसेट के अनुसार मोटापे से ग्रस्त लोगों की संख्या के हिसाब से हमारा देश अब केवल अमेरिका और चीन से ही पीछे यानि तीसरे स्थान पर है। आईसीएमआर के एक अध्ययन के अनुसार, हमारे देश में 1.2 अरब की आबादी में से 13 प्रतिशता लोग मोटापे से पीड़ित हो सकते हैं। यह विडंबनापूर्ण है, क्योंकि हाल ही में हमारे देश में चिंता का मुख्य कारण कुपोषण था।

मोटापा एक ऐसी स्थिति है, जहां एक व्यक्ति के शरीर में इतनी अधिक वसा जमा हो जाता है कि उसके स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ने लगता है। अगर किसी पुरुष के शरीर में कुल शारीरिक वसा 25 प्रतिशत से अधिक हो या महिला के शरीर में कुल शारीरिक वसा 30 प्रतिशत से अधिक हो तो डॉक्टरी भाषा में इस स्थिति को मोटापे से ग्रस्त माना जाता है। यदि बॉडी मास इंडेक्स (बीएमआई) 26 और 29.9 के बीच हे तो आपको अधिक वजन का माना जाता है। यदि बीएमआई 30 या उससे ऊपर है तो व्यक्ति को मोटापा से ग्रस्त माना जाता है।

मोटापे से जुड़ी समस्याएँ

मोटापे के कारण ढेर सारी स्वास्थ्य समस्याएं होती हैं, जिनमें टाइप 2 डायबिटीज, उच्च कोलेस्ट्रॉल, उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, अवसाद, स्लीप एपनिया, श्वसन समस्याएं, अस्थमा, बांझपन और ऑस्टियो आर्थ्राइटिस जैसी समस्याएं शामिल हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि शरीर का वजन एक किलोग्राम अधिक होने पर घुटनों पर वजन 4 गुना अधिक भार पड़ता है। इसलिए 50 किलो वजन वाले व्यक्ति के घुटनों पर 200 किलो अतिरिक्त दबाव पड़ता है।

प्रमुख कारण

बाहर का खाना : पहले की तुलना में आज अधिक संख्या में भारतीय घर से बाहर खाना खा रहे हैं। इससे समय की बचत हो सकती है, लेकिन यह आपकी सेहत के लिए अच्छा नहीं है।

खाने में अनुशासन : हम अपने पैसे का पूरा मूल्य वसूना चाहते हैं और कम पैसे में ज़्यादा से ज़्यादा हासिल करना चाहते हैं। लेकिन कुछ रुपये देकर अधिक मात्रा में खाना खाना अच्छा सौदा नहीं हो सकता हैं आप देखें कि आप जितना खा रहे हैं, वह आपकी ज़रूरत के अनुसार ही हो। आज के समय में कम मात्रा में खाना भी अनुशंसित मात्रा से अधिक हो जाता है। इसलिए खाने में भी अनुशासन बनाएं। जो खाएं, संतुलित खाएं।

लिक्विड शुगर : सोडा या शुगर युक्त अन्य पेय की बजाय केवल पानी पिएं। शुगरयुक्त ऐसे पेय में कृत्रिम रसायन होते हैं। इसलिए शुगरयुक्त पेय से बचें।

बहुत अधिक टीवी देखना : हमारे खान-पान की तरह ही हमारे रहन-सहन भी मोटापे को बढ़ा रहा है सोफे पर लेटकर बहुत अधिक टीवी देखना भी मोटापे का कारण है।

क्या है उपचार

मोटापा के उपचार की रणनीतियां अलग-अलग व्यक्ति के लिए अलग अलग होती हैं, जैसे आचार व्यवहार में परिवर्तन, शारीरिक गतिविधियां, वजन नियंत्रण के गैर क्लिनिकल उपाय, दवाओं का इस्तेमाल व शल्य चिकित्सा।

व्यवहार के परिवर्तन : खान पान की आदतों में बदलाव, शाररिक गतिविधि में वृद्धि करना, शरीर के बारे में जागरुक होना, शरीर को उचित तरीक़े से पोषण देने के बारे में जानना, अतिरिक्त गतिविधियों में सक्रिय होना तथा वजन प्रबंधन के व्यावहारिक लक्ष्य तय करना इसके तहत आते हैं।

शारीरिक गतिविधि : मोटापे पर नियंत्रण के लिए शारीरिक गतिविधि यां शुरू करना या उसमें वृद्धि करना

बाक़ी पेज 11 पर

शेष.... प्रथम पृष्ठ

जिलों से आते हैं। साफ है ताकि बाक़ायदा रणनीति बनाकर चयन किया गया है ताकि कोरोना पीड़ित जनता के जख़्मों पर मरहम लगाने की कोशिश की जा सके। कहा जा रहा था कि योगी राजपूतवाद फैला रहे हैं। योगी ने इसे भी दूर करने की कोशिश की है। उनके मंत्रिमंडल में 8 ठाकुर और 10 ब्राह्मण मंत्री हैं। जहां तक सोशल इंजीनियरिंग या इलेक्शन इंजीनियरिंग का प्रश्न है तो पिछले 3 चुनावों में ऐसा ही देख रहे हैं। 2014 के लोकसभा चुनावों में अपना दल के साथ भाजपा ने समझौता किया था जिसका लाभ उसे मिला। 2017 के विधान सभा चुनावों में अपना दल के साथ साथ सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के राजभर को साथ जोड़ा जिसका 30 से ज़्यादा सीटों पर प्रभाव माना जाता है। इसका भी लाभ मिला। 2019 के लोकसभा चुनावों में निषाद यानि केवट या मल्लाह जोड़े गए जो यमुना और गंगा किनारे बड़ी तादाद में बसते हैं। इनका सौ सीटों पर दख़ल माना जाता है। इस बार भाजपा के साथ अपना दल, निषाद और अन्य छोटे-छोटे दल हैं। चुनाव दिलचस्प

शेष.... मर्केल की राह पर हसीना?

सार्वजनिक परिवहन जलाए, लेकिन उन्हें मतपेटी मं जवाब मिलता है। स्वतंत्र बांग्लादेश इस वर्ष 50 वर्ष का हो गया और उसकी नेता 75 वर्ष की हो गईं हैं, तो उत्तराधिकार का प्रश्न उठना लाज़िमी है। हसीना अपने परिवार में उत्तराधिकारी तलाश करेंगी या पार्टी के वफादारों में से किसी एक को चुनेंगी, यह स्पष्ट नहीं है। दासगुप्ता कहते हैं, 'उनके उत्तराधिकारी को लेकर पार्टी में भी चर्चा नहीं होती है। अभी हसीना का कोई विकल्प नहीं है। वह बुज़ुर्ग हो रही हैं, लेकिन उनकी पार्टी और देश का काम अभी उनके बिना नहीं चल सकता। अलबत्ता यह प्रश्न हसीना को ज़रूर परेशान करेगा और उनके उत्तराधिकारी को, चाहे वे पार्टी से हों या कहीं ओर से, उनका पद छोड़ते ही दुर्जेय विरासत के साथ संघर्ष करना होगा। ❑❑

शेष.... प० बंगाल उपचुनाव....

मुक़ाबला करता लगता है जिसकी वजह से मार्च में हुए चुनावों मेमं इस पार्टी को 77 सीटें मिलीं। मगर ये सीटें कांग्रेस व वामपंथियों का वोट बैंक आंशिक रूप से हथियाते हुए मिलीं परंतु यह वैचारिक स्तर पर गोलबंदी नहीं है बल्कि चुनावी स्तर पर राजनीतिक कशमकश है क्योंकि बंगाल की संस्कृति अंतत: विचार धारा पर ही संचालित करती हैं यदि यह कहा जाये कि बंगाल राजनीतिक विचारधाराओं का महासागर है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी क्योंकि ये देश को आज़ादी दिलाने वाली कांग्रेस पार्टी का उद्गम स्थल भी है और कम्युनिस्ट विचार धारा को सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन का ज़रिया बनाने वाले स्व. एम.एन. राय की कार्यस्थली भी है तथा राष्ट्रवादी विचारों को स्वतंत्र भारत में व्यापक बनाने वाले डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जन्म स्थली भी है परंतु एक बात तय है कि 'बंग राष्ट्रवाद' का संबंध अपनी 'देसज' संस्कृति को केन्द्र बना कर ही घूमा रहा है जिसका प्रमाण इसके वे तीज-त्यौहार हैं जो पूरी धर्म निरपेक्षता के साथ मनाये जाते हैं। ❑❑

शेष.... मोटापे से राहत....

महत्वपूर्ण पहलू है। व्यावहारिक लक्ष्य तय करें तथा किसी तरह का व्यायाम, आदि शुरू करने से पहले अपने डॉक्टर से संपर्क करें।

डॉक्टर की मदद लेना : दवाओं या डॉक्टरों की मदद से वज़न घटाने का उपचार किसी क्लिनिक में किसी लाइसेंसधारी स्वास्थ्यकर्मी के ज़रिए दिया जाता है इसलिए क्लिनिक का चुनाव सोच समझकर करें।

शल्य चिकित्सा : मोटापे का सर्जिकल उपचार उन लोगों के लिए एक विकल्प है, जो चिकित्सकीय दृष्टि से रुग्ण मोटापे से ग्रस्त होते हैं। इस श्रेणी के तहत वे लोग आते हैं, जिनकी बीएमआई 40 या उससे अधिक होती है अथवा उनका वजन आदर्श शारीरिक वजन से 40 किलोग्राम अधिक होता है।

कैसे होती है शल्य चिकित्सा

अधिकांश बेरियट्रिक शल्य चिकित्सा प्रक्रियाओं का आधार खाए जा सकने वाले भोजन की मात्रा को सीमित करना और कम खाने पर ही पेट भर जाने का एहसास होना होता है। ये शल्य क्रियाएं हमेशा की होल सर्जरी का उपयोग करके की जाती है।

इन बातों का रखें ध्यान

आप काफी मात्रा में जल एवं फाइबर युक्त आहार का सेवन करें सलाद, सब्जियां, ताजे या सूखे फल और साबूत अनाज की रोटी या पास्ता बेहतर विकल्प है। इनसे कम कैलोरी में ही संतुष्टि मिलेगी।

दिन में तीन बार कम मात्रा में पौष्टिक स्नैक्स खाएं।

लिफ्ट की बजाए सीढ़ियों का प्रयोग करें और थोड़ी थोड़ी देर पर अपने डेस्क या सोफे से उठकर टहलें।

व्यायाम के साथ-साथ ग्रीन टीम का सेवन करें, ताकि आपको जल्द परिणाम दिखें।

मोनोसैचुरेटेड फैटी एसिड से अपने आहार को अपने भोजन में शामिल करें। जैसे जैतुन का तेल, मेवे, एवोकैडो आदि।

सही व्यायाम ज़रूरी है, ताकि मेटाबोलिज्म बढ़े। सप्ताह में पांच दिन 45 मिनट के लिए तेज़ी के साथ पैदल चलें इससे मोटापे को कम करने में मदद मिलेगी। चलने की रफ्तार प्रति घंटे 10 किमी तक ले जाएं।

खुद भाजपा को नहीं है ग्रामीण क्षेत्रें में जीत की उम्मीद

बीते एक साल से केंद्र के विवादित कृषि कानून के खिलाफ जारी किसानों के आंदोलन के बीच बीजेपी को खुद पंजाब के आगामी चुनाव में ग्रामीण क्षेत्रों में जीत की कोई उम्मीद नहीं है। यही कारण है कि एक राजनीतिक ताकत बनने के लिए बीजेपी की नजर आगामी चुनावों में केवल 35 शहरी विधानसभा क्षेत्रें पर है। भगवा पार्टी इन शहरी विधानसभा क्षेत्रें को जीतने के लिए अतिरिक्त प्रयास करेगी। 117 सदस्यीय पंजाब विधानसभा के लिए चुनाव अगले साल फरवरी-मार्च में होंगे। किसान आंदोलन और खालिस्तानी विवाद के बाद खुद के खिलाफ उभरे गुस्से के बीच बीजेपी ने अपनी रणनीति बदलते हुए राज्य भर में फैली पंजाब की लगभग तीन दर्जन शहरी सीटों पर फोकस करने का फैसला किया है। पार्टी के एक अंदरूनी सूत्र ने बताया कि शहरी निर्वाचन क्षेत्र अब पूरे राज्य में फैले हुए हैं और वहां के मतदाताओं की पंजाब के अन्य हिस्सों में अलग-अलग आकांक्षाएं हैं। भगवा खेमा यह भी मानता है कि बीजेपी को यहां उस तरह के विरोध का सामना नहीं करना पड़ेगा जैसा कि पंजाब के ग्रामीण इलाकों में चल रहे किसान आंदोलन के कारण हो रहा है। केंद्र की बीजेपी सरकार द्वारा पारित तीन नए कृषि कानूनों का राज्य के किसान पिछले एक साल से विरोध कर रहे हैं। पार्टी के एक नेता ने कहा कि किसानों के विरोध का शहरी क्षेत्रों में कम प्रभाव पड़ता है और शहरी मतदाता विकास के अलावा कम्र अन्य मुद्दों पर मतदान करते हैं।

शेष.... मंज़र पस-मंज़र

बच्चे कानूनी प्रतिबंध के बावजूद कालीन, पटाखे बनाने वाले कारखानों, चाय की दुकानों, ढाबों और घरेलू नौकर के रूप में काम करते पाए जाते हैं। वहां उनके मालिक न तो उनकी बुनियादी और अनिवार्य सुविधाओं का ध्यान रखते हैं और न खाने पीने का। ऊपर से उनके साथ मार पिटाई भी करते हैं। बच्चों के यौन शोषण पर क़ाबू पाना तो दिन पर दिन कठिन होता जा रहा है इसलिए हर बार की तरह महज़ आंकड़ों पर चिंता ज़ाहिर करने के बजाय ऐसे अपराधों की जड़ों पर प्रहार करने के उपायों पर विचार करने की ज़रूरत है।

बच्चों की चिंता

महामारी के लंबे दौर के बाद ज़्यादातर राज्यों में स्कूल खुल चुके हैं। हालांकि अभी भी कई राज्यों में छोटी कक्षाएं शुरू नहीं हुई हैं इसके पीछे बड़ा कारण संक्रमण फिर से फैलने की आशंका है। माना जा रहा है कि अचानक से भीड़ बढ़ने से कहीं बच्चे संक्रमित न होने लगें। वैसे समय-समय पर महामारी विशेषज्ञ इस आशंका को ख़ारिज करते रहे हैं। दूसरी लहरों का प्रकोप धीमी पड़ने के बाद विशेषज्ञों की ओर से ऐसे सुझाव आए थे कि जहां संक्रमण का फैलाव कमज़ोर पड़ चुका है, वहां सावधानी के साथ स्कूलों को खोला जा सकता है। इसके बाद ही जुलाई में राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, मध्य प्रदेश, तेलंगाना, छत्तीसगढ़, बिहार, पंजाब कई राज्यों ने चरणबद्ध तरीक़े से स्कूलों को खोलने की दिशा में क़दम बढ़ाया था। पहले चरण में नौवीं कक्षा से 12वीं तक कक्षाओं के विद्यार्थियों को स्कूल जाने की अनुमति दी गई। कई राज्यों ने प्राथमिक और उच्च प्राथमिक स्तर की कक्षाएं भी शुरू कर दी थीं। पर बीच में कुछ राज्यों के मामले बढ़ते देख 8वीं तक की कक्षाओं को नहीं बुलाने का फैसला लेना पड़ गया।

12 वर्ष से कम आयु वाले बच्चों में संक्रमण फैलने का ख़तरा ज़्यादा इसलिए भी माना जा रहा हे कि अभी इस आयु वर्ग के बच्चों का टीकाकरण शुरू नहीं हुआ है। फिर बार-बार तीसरी लहर की आशंका भी जताई जाती रही। इससे भी लोगों में बच्चों को स्कूल भेजने पर डर बना हुआ है। हालांकि अब भारत में बच्चे के टीके लगभग तैयार हो चुके हैं और कोवैक्सीन का ट्रॉयल भी पूरा हो चुका है जल्द ही बच्चों का टीकाकरण भी शुरू किया जाएगा। पर इस पूरे टीकाकरण में एक लंबा समय लगेगा अब सवाल यह है कि बच्चों को कब तक स्कूल नहीं भेजा जाए? इस बारे में हाल में विश्व बैंक की एक रिपोर्ट तसल्ली देने वाली प्रतीत होती हैं। इस रिपोर्ट में कहा गया है कि अगर व्यापक स्तर पर टीकाकरण नहीं भी होता है तो भी ख़तरे की बात नहीं है। रिपोर्ट में ज़्यादा ज़ोर इस बात पर है कि अब कैसे भी करके बच्चों को घर पर हो रही ऑनलाइन पढ़ाई के दुष्चक्र से बाहर निकाला जाना ज़रूरी है। इससे बच्चे शारीरिक और मानसिक रूप से बीमार हो रहे हैं। अवसाद, चिंता, हिंसा जैसी गंभीर समस्याएं उन्हें घेर रही हैं। खुदकुशी की घटनाएं सामने आ रही हैं इसलिए संक्रमण से कहीं ज़्यादा बड़ा ख़तरा अब महामारी के ख़ौफ का खड़ा हो गया है।

यह सही है कि महामारी ख़तरा पहले इसलिए भी ज़्यादा गंभीर था कि इसकी उत्पत्ति से लेकर फैलाव और इलाज के बारे में किसी को कुछ पता नहीं था। पर अब इस बारे में काफी कुछ सामने आ चुका है। बड़े पैमाने पर टीकाकरण हो रहा है। डर के मारे बचाव संबंधी उपाय भी लोग अपनाने लगे हैं। डेढ़ वर्ष के अनुभव ने महामारी और इससे उपजे संकटों से निपटने को लेकर काफी कुछ सीखने का मौक़ा दिया है हालांकि छोटे बच्चों के साथ व्यावहारिक दिक्क़तें पेश आ सकती हैं, पर उन्हें दूर करने के तरीक़े भी हमारे पास हैं। अगर स्कूलों में सावधानी बरती जाए और बच्चों को कोरोना बचाव संबंधी व्यवहार के पालन की आदत डलवाने का प्रयास हों तो उन्हें स्कूल भेजने में कोई डर की बात नहीं। बच्चों के विकास और व्यक्तित्व निर्माण में जो भूमिका स्कूल निभाते हैं, वह घर में बैठे बैठे ऑनलाइन शिक्षण व्यवस्था में संभव नहीं है। इसलिए स्कूलों को खोले जाने में अब कोई हिचक नहीं होनी चाहिए। बस नियमों की मानक प्रक्रिया का पालन सुनिश्चित हो, यह देखने की बात है।

शेष.... अख़्लाक़ की ताक़त...

परेशान होकर अबू हुरैरह को लालच दिया कि वह शैतान से एक अमल सीख लें जो उन्हें आईन्दा शैतानी असरात से बचाए रखेगा। अबू हुरैरह उस हिफ़ाज़ते शैतानी के अमल से खुश हो गए और शैतान को छोड़ने पर राज़ी हो गए। शैतान ने अबू हुरैरह को आयतल कुर्सी का अमल बताया कि रात को सोते समय बिस्तर पर बा-वुज़ू आयतल कुर्सी की तिलावत तवाज्जुह और खुश्ऊ के साथ पढ़ेगा उससे तमाम रात और तमाम दिन शैतानी असरात और अगवा कारी से सुरक्षित रहेगा। सुबह को अबू हुरैरह ने रात का सारा वाकेआ रसूले पाक सल्लल्लललाहो अलैहि वसल्लम को बताया, आपने फरमाया : शैतान झूठा है मगर उसका बताया हुआ यह अमल सच्चा है, तुम इस पर अमल किया करो शैतान जिन्नात की मख़्लूक़ में से हैं और आग का अंसुर यानि नारी अंसुर उस पर ग़ालिब है। नारी मख़लूक़ दूसरा रूप धारण कर सकती है। इंसानी मख़लूक़ पर ख़ाक़ का अंसुर ग़ालिब है यह दूसरा रूप अपना नहीं सकता।

अल्लाह तआला ने नबी-ए-पाक सल्लल्लललाहो अलैहि वसल्लम को जो अख़्लाक़ी मोजिज़ा अता किया था, उसका अमली पहलू यह भी था कि आप ने इबादात नमाज, रोज़ा आदि की व्यवस्था को एलकाक हसना की तरबियत से जोड़ दिया था, इसलिए अल्लाह की हर इबादत खुदा की रज़ाजूई का पहलू भी रखती है और अख़्लाक़े हसना के ज़रिए बंदों की खिदमत का पहलू भी रखती है, दूसरे लफज़ों में इस्लामी इबादातों, अकाएद से आख़िरत की ज़िन्दगी में भी जन्नत बनती है और दुनियावी ज़िन्दगी भी जन्नत का नमूना बन जाती है। क़ुरआन -ए-करीम ने दुनिया की ज़िन्दगी को हयाते तैयबा (पाकीज़ा) ज़िन्दगी से ताबीर किया है ''यह भी कहा जा सकता है कि हर इबादत जो हक्कुल्लाह की अदायगी है उसमें जिमनी तौर पर हक्कुल ईबाद की अदायगी भी है, इस्लाम ने हक्कुल ईबाद की अहमियत को सामने रखते हुए हुकूक़ुल ईबाद की वाज़ेह तालीम भी दी है। इस्लाम ने हुकूक़ुल ईबाद की व्यवस्था भी बनाई है और इबादात (हुकूक़ुल्लाह) के साथ भी हुकूक़ुल ईबाद की तर्बियत का इंतज़ाम किया है यानि तालीम भी, तर्बियत भी है। ❑❑

SHANTI MISSION (HINDI WEEKLY) NEW DELHI Postal Registration No. DL(C)-01/1266/2021-23
Publishing Date : **10 Oct.2021** Posting Days : **MON. - TUE.** at **N.D.P.S.O.** New Delhi-110002 R.N.I. 57270/93

मंज़र पस-मंज़र — मीम.सीन.जीम

•सुधार की दरकार•बच्चों की चिंता

अपराध का प्रसार

सुधार की दरकार

संयुक्त राष्ट्र में सुधार को लेकर ज़्यादातर राष्ट्र लंबे समय से आवाज़ उठाते रहे हैं। लेकिन अब तक इस दिशा में ऐसा कुछ भी होता नहीं दिखा है, जिससे यह संकेत मिलता हो कि बदली हुई वैश्विक परिस्थितियों में यह निकाय खुद को भी बदलेगा। संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना को 75 वर्ष हो चुके हैं। तब से अब तक दुनिया में बड़े बदलाव आ चुके हैं। विश्व युद्ध शीतयुद्ध जैसे भयानक दौरों से दुनिया गुज़र चुकी है। महाशक्तियों के मायने और स्वरूप बदल चुके हैं। ऐसे में दुनिया को वैश्विक व्यवस्था में बांधे रखने की ज़िम्मेदारी निभाने वाले संयुक्त राष्ट्र में सुधार की ज़रूरत है। मगर हैरानी की बात है कि आज जिन देशों का इस निकाय पर नियंत्रण बना हुआ है, वे सुधार की बात तो करते हैं, पर उस दिशा में क़दम बढ़ाने से बचते रहे हैं। ऐसे में संयुक्त राष्ट्र महासभा के 76वें सत्र के अध्यक्ष अब्दुल्ला शाहिद ने सुरक्षा परिषद् में सुधार के मुद्दे पर क़दम बढ़ाने की बात कही है।

सुरक्षा परिषद में सुधार का मुद्दा दरअसल सदस्यता से जुड़ा है। इस समय सुरक्षा परिषद के पांच स्थायी सदस्य अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, रूस और चीन हे। लेकिन ये देश किसी और देश को स्थायी सदस्य के रूप में घुसने देने को राज़ी नहीं दिखते। इन देशों को वीटो का अधिकार मिला है इसलिए तमाम मुद्दों पर ये देश वीटो के अधिकार का इस्तेमाल करते हुए अहम फैसलों में भी बाध ा खड़ी कर देते हैं इसलिए भी सुरक्षा परिषद का विस्तार एक जटिल मुद्दा बन गया है। भारत लंबे समय से सुरक्षा परिषद् में स्थायी सदस्यता की मांग करता आया है। वैसे चीन को छोड़ दें तो बाकी स्थायी सदस्य भारत की दावेदारी का समर्थन करते आए हैं। हाल में चमूह चार देशों - भारत, जर्मनी, जापान और ब्राजील ने भी इस मुद्दे को उठाया। चारों ही देश दुनिया की बड़ी आर्थिक शक्तियों में शामिल हैं इनकी क्षेत्रीय हैसियत भी कम नहीं है। वैश्विक स्तर पर बड़े समूहों में भी शामिल हैं। भारत और ब्राज़ील ब्रिक्स समूह के सदस्य हैं, जिसमें रूस और चीन भी है। जापान और भारत क्वाड देशों के समूह में हैं, जिसकी कमान अमेरिका ने संभाली हुई है। जर्मनी यूरोप की बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश है। ऐसे में इन देशों को सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता क्यों नहीं मिलनी चाहिए?

आज दुनिया आतंकवाद, गृहयुद्ध, अलगाववादी हिंसा, शरणार्थी समस्या, जलवायु संकट, परमाणु हथियारों की होड़ जैसी चुनौतियों का सामना कर रही है। ऐसे समय में संयुक्त राष्ट्र की वैश्विक भूमिका बढ़ना स्वाभाविक है। वरना कैसे यह निकाय ज़्यादा प्रभावी और प्रासंगिक बन पाएगा? महासभा की हर वर्ष होने वाली बैठकों में सुरक्षा परिषद में सुधार का एजेंडा प्रमुख रूप से छाया रहता है। लेकिन सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्यों का रुख़ इस सुधार में एक बड़ी बाधा के रूप में सामने आता रहा है। आज अमेरिका और चीन के बीच जो टकराव बना हुआ है, उसमें दुनिया फिर से दो ध्रुवों में बंटने लगी है। ऐसे में सुरक्षा परिषद् के भीतर सुधार के मुद्दे पर ये देश कैसे बढ़ेंगे, यह बड़ा प्रश्न है। अगर दुनिया के बड़े देशों को सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता नहीं मिलती है तो कई संयुक्त राष्ट्र जैसा दूसरा समांतर वैश्विक संगठन खड़ा करने से ज़रा भी नहीं झिझकेंगे। ऐसे में प्रतिस्पर्धा और टकराव और बढ़ेंगे ही।

अपराध का प्रसार

एक सभ्य समाज की पहचान इस बात से भी होती है कि उसमें बच्चों के साथ कैसा व्यवहार होता है, वे खुद को कितना सुरक्षित महसूस करते हैं। इस पैमाने पर हम सदा से पिछड़े नज़र आते रहे हैं। कहते हैं कि समाज में शिक्षा प्रसार से हिंसा और अपराध जैसी घटनाएं स्वत: कम होने लगती है। भारत में शिक्षा की दर तो बढ़ रही है, मगर हिंसा और अपराध के मामले भी उसी अनुपात में बढ़े हुए दर्ज होते हैं। सबसे चिंता की बात है कि भारत में बच्चों के साथ हिंसक व्यवहार, उनके अधिकारों के हनन पर अंकुश नहीं लग पा रहा। नए आंकड़ों के अनुसार पिछले वर्ष रोज़ करीब साढ़े तीन सौ बच्चों के साथ आपराधिक घटनाएं घटीं। हालांकि ताज़ा आंकड़ों में पहले की तुलना में आपराधिक मामलों में कुछ कमी दर्ज हुई है, मगर वह संतोषजनक नहीं है। कई मामलों में बच्चों के साथ दुर्व्यवहार की घटनाएं बढ़ी हैं। कोरोना काल में जब पूर्णबंदी थी और लंबे समय तक स्कूल बंद रहे, घर में रहकर ही पढ़ाई करने की मजबूरी थी, तब बाल विवाह और ऑनलाइन दुर्व्यवहार के मामलों में चिंताजनक बढ़ोत्तरी दर्ज हुई हालांकि अध्ययनकर्ताओं और राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो ने इसके पीछे बड़ी वजह कोरोना काल में हुई बंदी और कामकाज के ठप पड़ जाने, परिवारों के सामने आर्थिक संकट खड़ा हो जाने को माना है।

मगर पूर्णबंदी के दौरान जब कल-कारखाने बंद रहे और उसके बाद भी बहुत सारे रोज़गार सुचारु रूप से बहुत दिनों तक नहीं चल पाए, तब बच्चों के साथ काम की जगहों पर दुर्व्यवहार की घटनाएं भी नहीं होने पाईं, इसलिए आंकड़े पहले की तुलना में कुछ घटे हुए दर्ज हुए। बंदी की वजह से बच्चों को घरों में बंद रहने को मजबूर होना पड़ा था, ऐसे में उनके माता पिता का अनुशासन और हिंसक व्यवहार कुछ अधिक देखा गया। यह खुलासा बंदी के दौरान हुए अन्य अध्ययनों से हो चुका है। ऐसे में बाल अधिकारों के लिए काम करने वाली संस्थाओं और सरकारी महकमों के लिए यह चुनौती बनी हुई है, कि इस पर कैसे क़ाबू पाया जाए। यों बाल अपराध, बाल अधिकारों के हनन, बेवजह प्रताड़ना, बाल मज़दूरी आदि के ख़िलाफ़ कड़े क़ानून हैं, मगर उनका कितना पालन हो रहा है, इसका अंदाज़ा ताज़ा आंकड़ों से लगाया जा सकता है। बच्चों के ख़िलाफ़ आपराधिक घटनाओं के मामले में मध्य प्रदेश प्रथम है, फिर उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र और बिहार है।

भारतीय समाज में बच्चों के प्रति हिंसक व्यवहार एक आम चलन की तरह देखा जाता है। बहुत सासरे लोगों की धारणा है कि मारने पिटने से बच्चे अनुशासित होते हैं, जबकि अनेक मोक़ों पर, अनेक अध्ययनों से उजागर है कि मारपीट का बच्चों के मानसिक और शारीरिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। ऐसे ही बहुत सारे ग़रीब परिवारों के

बाक़ी पेज 11 पर

योगी ने ए० के० शर्मा को दिखाया अंगूठा

योगी आदित्यनाथ पिछले दिनों उत्तर प्रदेश के दौरे पर रहे। वह कई अन्य भाजपा मुख्यमंत्रियों की तरह नहीं हैं जो दिल्ली में अपने राजनीतिक आक़ाओं को सलाम बजाते रहते हैं। भाजपा के अंदरूनी सूत्र बताते हैं कि केन्द्रीय नेतृत्व उन्हें सीधे तौर पर कुछ कहने से बचता है और यह सोचकर कोई निर्देश देने से भी बचता है कि कहीं योगी उनके निर्देश को ठुकरा न दें। एक के बाद एक तीन भाजपा शासित राज्यों के मुख्यमंत्रियों को कुर्सी से हटा दिया गया लेकिन योगी ज़रा हट कर हैं।

ऐसा कहा जाता है कि योगी बहुत से वरिष्ठ नेताओं के फोन भी नहीं उठाते बल्कि अपनी सुविधा के अनुसार उन्हें कॉल बैक करते हैं। केन्द्रीय आलाकमान भी काफी परेशान हो गई थी जब योगी आदित्यनाथ ने सुनील बंसल (जो लखनऊ में पार्टी के मामलों में काफी प्रभावशाली हैं) का क़द छोटा कर दिया था। सुनील बंसल संगठन महामंत्री हैं और पिछले काफी सालों से उत्तर प्रदेश में उनका काफी प्रभाव था। उनके आवास पर मुख्यमंत्री आवास के मुक़ाबले ज़्यादा भीड़ इकट्ठी होती थी, लेकिन 2017 के बाद वक़्त बदल गया है।

अब सुनील बंसल का क़द छोटा हो गया है। एक समय में भाजपा आलाकमान योगी आदित्यनाथ को भी हटाना चाहती थी लेकिन ऐसा न हो सका इसलिए आलाकमान ने ए.के. शर्मा को भेजा जो पी.एम.ओ. में थे और मोदी के विश्वासपात्र थे। ए.के. शर्मा को सचिव के तौर पर एम.एस.ई. में भेजा गया और वह स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेकर एम.एल.सी. बन गए। यह सुझाव दिया गया कि उन्हें मंत्री बनाया जाए और गृह विभाग दिया जाए। ज़ाहिर है कि आलाकमान चाहती थी कि यू.पी. को भी गुजरात जैसे अन्य राज्यों की तरह चलाया जाए जहां के. कैलाशनाथन मोदी के गुजरात से जाने के 7 वर्ष बाद भी मुख्यमंत्री के मुख्य प्रमुख सचिव बने हुए हैं लेकिन योगी ने ए.के. शर्मा को मंत्री तक नहीं बनाया और वह पार्टी के दर्जनभर उपाध्यक्षों में से एक होकर रह गए हैं।

ज़रूरी ऐलान

आपकी ख़रीदारी अवधि पते की चिट पर अंकित है। अवधि की समाप्ति से पूर्व रक़म भेजने की कृपा करें।

रक़म भेजने के तरीक़े:-

❶ मनीआर्डर द्वारा ❷ **Paytm** या **PhonePe** द्वारा **9811198820** पर **SHANTI MISSION**

❸ ऑनलाइन हेतु बैंक खाते का विवरण

SBI A/c **10310541455**
Branch: **Indraprastha Estate**
IFS Code: **SBIN0001187**

अपने प्रिय अख़बार साप्ताहिक शांति मिशन को इंटरनेट पर देखने के लिये लॉगऑन करें:
www.aljamiat.in ——— www.jahazimedia.com
Mob. 9811198820 — E-mail: Shantimissionweekly@gmail.com

ख़रीदारी चन्दा

वार्षिक	Rs.130/-
6 महीने के लिए	Rs.70/-
एक प्रति	Rs.3/-

जानकारी के लिये सम्पर्क करें
साप्ताहिक
शांति मिशन
1, बहादुरशाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली-110002
फोन : 011-23311455

जमीअत ट्रस्ट सोसायटी की तरफ से मुद्रक, प्रकाशक शकील अहमद सैयद ने शेरवानी आर्ट प्रिंटर्स, 1480, क़ासिमजान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से छपवाकर मदनी हाल, न. 1, बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित किया। संपादक:- मोहम्मद सालिम, फोन:- 23311455, 23317729, फैक्स:- 23316173